

अब दिल्ली-जयपुर राजमार्ग के साथ-साथ RRTS होगा विकसित, सराय काले खां से अलवर तक बनेगा कॉरिडोर

गुरुग्राम रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) दिल्ली-जयपुर हाईवे के साथ-साथ विकसित करने पर विचार किया जा रहा है। हालांकि जानकारों का मानना है कि ओल्ड दिल्ली रोड को कॉरिडोर से जोड़ने पर अधिक लाभ होगा। पहले गुरुग्राम शहर के भीतर से होते हुए कॉरिडोर को विकसित करने की योजना थी। अब दिल्ली की एयरोसिटी से आगे दिल्ली-जयपुर हाईवे के साथ-साथ कॉरिडोर विकसित करने पर विचार शुरू किया गया है।



“ ओल्ड दिल्ली रोड के साथ-साथ कॉरिडोर विकसित करने से गुरुग्राम शहर को अधिक लाभ होता। हाईवे के साथ कॉरिडोर बनने पर लोगों को सुविधा हासिल करने के लिए निजी वाहन या सार्वजनिक क्षेत्र के वाहनों का उपयोग करना पड़ेगा। इससे शहर के भीतर ट्रैफिक का दबाव कम नहीं होगा। जहां तक योजना का सवाल है तो निश्चित ये कॉरिडोर विकसित होते ही दिल्ली से अलवर तक की तस्वीर बदल जाएगी। दिल्ली में काम करने वाले लोग मानेसट से लेकर देवाड़ी तक इलाके में रहना पसंद करने लगेंगे।

– राव विवेक सिंह

चेयरमैन, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट

संजय बाटला, संपादक

नई दिल्ली/गुरुग्राम। गुरुग्राम रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) दिल्ली-जयपुर हाईवे के साथ-साथ विकसित करने पर विचार किया जा रहा है। अगले महीने तक रूट को अंतिम रूप दे दिया जाएगा। कहाँ पर कॉरिडोर भूमिगत रहेगा और कहाँ पर ऊपर, इस बारे में निर्णय होना है।**ट्रैफिक कम करना है तो करना होगा ये काम** हालांकि जानकारों का मानना है कि ओल्ड दिल्ली रोड को कॉरिडोर से जोड़ने पर अधिक लाभ होगा। ट्रैफिक का दबाव कम करना है तो कॉरिडोर को शहर के भीतर से निकालना होगा। दिल्ली में सराय काले खां से लेकर राजस्थान में अलवर तक आरआरटीएस का कॉरिडोर विकसित करने की योजना है।

पहले गुरुग्राम शहर के भीतर से होते हुए कॉरिडोर को विकसित करने की योजना थी, यानी ओल्ड दिल्ली रोड को भी कॉरिडोर से जोड़ने की योजना थी। किंतु अब दिल्ली की एयरोसिटी से आगे दिल्ली-जयपुर हाईवे के साथ-साथ कॉरिडोर विकसित करने पर विचार शुरू किया गया है।**इन जगहों से होकर गुजरेगी ट्रेन** इसके मुताबिक सराय काले खां से आईएनए, मुनिरका, एयरोसिटी, साइबर सिटी, इफको चौक, राजीव चौक, हीरो होडा चौक, खेडकीदोला, मानेसर, पंचगाम चौक और बिलासपुर चौक से आगे अलवर की तरफ कॉरिडोर हाईवे के साथ-साथ विकसित किया जाएगा। इससे जहाँ कॉरिडोर विकसित करने में समय कम

लगेगा, वहीं दिल्ली-जयपुर हाईवे पर से ट्रैफिक का दबाव काफी कम हो जाएगा। वर्तमान में एनसीआर में काम करने वाले आसपास ही रहना चाहते हैं।**निर्माण शुरू करने से पहले की जांच पूरी** कॉरिडोर का जमीनी स्तर पर कार्य शुरू करने से पहले के कई काम पूरे हो चुके हैं। मिट्टी की जांच पूरी हो चुकी है। रूट पर कहाँ पाइपलाइन है, कहाँ सीवरलाइन है और कहाँ टेलीफोन लाइन है आदि के बारे में जानकारी हासिल की जा चुकी है। बिजली के टावर भी शिफ्ट किए जा चुके हैं। ऐसे में केंद्र सरकार से डीपीआर मंजूर होते ही जमीनी स्तर पर दो से तीन महीने में काम शुरू हो जाएगा। रूट में बदलाव करने का विचार शुरू करने के पीछे क्या कारण है, इस बारे में एनसीआरटीसी के अधिकारी कुछ

भी बोलने को तैयार नहीं हैं।**70 मिनट में दिल्ली से पहुंचेंगे एसएनबी** योजना के मुताबिक रूट पर 10 मिनट के अंतराल पर ट्रेन की सुविधा उपलब्ध होगी। ट्रैक पर औसतन 100 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से ट्रेनें चलेगी। इससे एसएनबी तक दिल्ली से केवल 70 मिनट में पहुंच जायेंगे।**तीन चरणों में बनेगा कॉरिडोर** बता दें कि नेशनल कैपिटल रीजन ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन (एनसीआरटीसी) द्वारा प्रथम चरण में दिल्ली-गुरुग्राम-एसएनबी (शाहजहांपुर-नीमराणा-बहरोड़) तक 106 किमी का कॉरिडोर विकसित किया जाएगा। दूसरे चरण में सोतानाला तक और तीसरे चरण में अलवर तक कॉरिडोर बनेगा।

स्पेन से भारत रवाना हुआ C-295 परिवहन विमान, 13 सितंबर को एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने किया था रिसीव

भारतीय वायु सेना का पहला C-295 परिवहन विमान शनिवार को स्पेन से भारत के लिए रवाना हुआ। विमान को थूप कैप्टन पीएस नेगी उड़ा रहे हैं। अगले कुछ दिनों में वडोदरा पहुंचने से पहले यह माल्टा, मिस्र और बहरीन में रुकेगा। विमान को 13 सितंबर को एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने रिसीव किया था।

नई दिल्ली। भारतीय वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने कहा था कि यह न केवल भारतीय वायुसेना के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए एक बड़ा मील का पत्थर है। यह दो कारणों से है हमारी सामरिक एयरलिफ्ट क्षमताओं को बढ़ाएगा। एक राष्ट्र के लिए यह एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक है। आत्मनिर्भर भारत के लिए इस संयंत्र से पहले 16 विमान निकलने के बाद 17वां विमान भारत में बनाया जाएगा। यह भारतीय विमानन उद्योग के लिए एक बड़ा कदम है, जहां हम देश में पहला सैन्य परिवहन विमान बनाएंगे। उन्होंने कहा था कि IAF का ऑर्डर 56 विमानों के लिए था। तटरक्षक बल और भारतीय नौसेना को भी विमानों की आवश्यकता है। ऐसे में यह संख्या 56 से भी अधिक हो सकती है।

सितंबर 2021 में किया था समझौता भारत ने सितंबर 2021 में 56 सी-

295 सैन्य परिवहन विमान की आपूर्ति के लिए एयरबस के साथ समझौता किया था। समझौते के मुताबिक, वडोदरा में एयरबस के साथ साझेदारी में टाटा एडवॉन्स सिस्टम्स लिमिटेड द्वारा स्थापित संयंत्र में 40 विमान बनाए जाएंगे। पिछले साल अक्तूबर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वडोदरा में 295 विमानों की विनिर्माण सुविधा की आधारशिला रखी थी। यह किसी निजी संघ द्वारा भारत में निर्मित किया जाने वाला पहला सैन्य विमान होगा।

मई में सेविले में अपनी पहली उड़ान सफलतापूर्वक पूरी की थी भारत के लिए निर्मित पहले सी295 विमान ने मई में सेविले में अपनी पहली उड़ान सफलतापूर्वक पूरी की थी। दूसरे विमान का निर्माण सेविले उत्पादन संयंत्र में अंतिम चरण में है और इसे अगले साल मई में भारतीय वायुसेना को सौंपा जाना तय है। भारतीय वायुसेना के छह पायलट और 20 तकनीशियन पहले ही सेविले सुविधा केंद्र में व्यापक प्रशिक्षण ले चुके हैं।

इस माह के अंत में बेड़े में शामिल होने की उम्मीद इससे पहले रक्षा अधिकारी ने बताया था कि सेविले में एक समारोह के बाद विमान भारत के लिए उड़ान भरेगा।

सितंबर 2021 में किया था समझौता भारत ने सितंबर 2021 में 56 सी-

अभी भी विश्व का सबसे प्रदूषित शहर है दिल्ली, जानिए क्यों खत्म नहीं हो रहा सांसें का संकट

स्विस एजेंसी आइक्यू एयर की हालिया रिपोर्ट ने दिल्ली को अभी भी विश्व का सर्वाधिक प्रदूषित शहर बताया है। कहने को एक्वआइ का स्तर आंकड़ों में जरूर कम हुआ है लेकिन लेकिन यह किसी भी तरह की राहत या प्रसन्नता का विषय कर्तई नहीं है। केंद्र और राज्य सरकार सहित एजेंसियों के भी अनेकानेक प्लान बनाने के बावजूद अब भी यह स्थिति होना खासतौर पर विचारणीय है।

नई दिल्ली। स्विस एजेंसी आइक्यू एयर की हालिया रिपोर्ट ने दिल्ली को अभी भी विश्व का सर्वाधिक प्रदूषित शहर बताया है। कहने को एक्वआइ का स्तर आंकड़ों में जरूर कम हुआ है, लेकिन यह किसी भी तरह की राहत या प्रसन्नता का विषय कर्तई नहीं है।

केंद्र और राज्य सरकार सहित एजेंसियों के भी अनेकानेक प्लान बनाने के बावजूद अब भी यह स्थिति होना खासतौर पर विचारणीय है। कहने को दिल्ली सरकार ने पिछले साल 10 सूत्रीय विंटर एक्शन प्लान भी बनाया, किन्तु उसका भी असर कुछ नजर नहीं आया।

निकाय व्यवस्था है। मतलब, कुछ विभाग दिल्ली सरकार के अधीन हैं और कुछ केंद्र सरकार के अधीन। अनेक एजेंसियां और विभाग स्वायत्त संस्थान की तरह काम करते हैं। ऐसे में इन सबके बीच सामंजस्य नहीं रह पाता। राजनीतिक मतभेद भी आड़ आ जाते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि कोई भी योजना अपने मूल मकसद को पूरा नहीं कर

पाती। अब चाहे सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को मजबूत बनाने का मामला हो या नियमों का उल्लंघन करने वाले सरकारी विभागों और एजेंसियों पर निष्पक्ष ढंग से कार्रवाई करने का... कुछ भी ढंग से नहीं हो पाता।

यही हाल विंटर और समर एक्शन प्लान का है। अंतिम छोर तक तो लोगों को इस प्लान के बारे में ही नहीं पता होता। कार्रवाई करने वाली एजेंसियां भी बस लीपापोती तक सिमटकर रह जाती हैं।

सरकारी उदासीनता का आलम बयां करते निम्न उपाय

- एक जुलाई 2022 से सिंगल यूज प्लास्टिक की 19 वस्तुओं पर प्रतिबंध लग गया। लेकिन कागजों में यह भले ही प्रतिबंध लग गया, जमीनी स्तर पर इसका पालन कहीं नहीं हो पाया है। विभिन्न स्तरों पर नियमों का उल्लंघन देखा जा रहा है।
- राउज एक्वेन्यू में तैयार हुई सुपर साइट इस साल जनवरी के अंत में शुरू तो हो गई, लेकिन मिल रही जानकारी पर आगे कोई कार्रवाई नहीं हो रही। रियल टाइम सोर्स अपाशर्नमेंट अध्ययन भी शुरू हो गया है। इससे पता चल रहा है कि कहाँ पर किस वजह से वायु प्रदूषण बढ़ रहा है।
- पौधारोपण और स्मॉग टावर, दोनों की ही रिपोर्ट आई। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय के मुताबिक स्थिति संतोषजनक रही। लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं था।
- बायो डीकंपोजर के इस्तेमाल पर सवाल उठे। पंजाब में इसके प्रयोग से परहेज किया गया।
- इलेक्ट्रिक वाहन नीति किंकर्षण के किंकर्षण के बावजूद इलेक्ट्रिक वाहनों को अभी भी बहुत बढ़ावा नहीं मिल रहा।
- वन विभाग द्वारा हाई कोर्ट में जमा की गई रिपोर्ट में सामने आया कि दिल्ली में हर घंटे तीन पेड़ काटे जाते हैं।

इस साल जनवरी से जुलाई तक पीएम 2.5 और पीएम 10 का स्तर (माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर में)

माह	पीएम 10	पीएम 2.5
जनवरी	284	177
फरवरी	211	98
मार्च	170	75
अप्रैल	197	69
मई	185	65
जून	136	45
जुलाई	77	35

भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते ईवी बाजारों में क्यों है शुमार, जानें अहम बातें

परिवहन विशेष न्यूज

बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पर 22 से 24 सितंबर के बीच होने वाली मोटोजीपी रेस में राइडर्स की सुरक्षा करने के लिए शनिवार को बीएमडब्ल्यू सेफ्टी बाइक और कार बीआईसी ट्रैक पर पहुंची। इनमें बीएमडब्ल्यू एम5सीएस स्पोर्ट्स कार है। यह कार 300 से 320 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल सकती है। इसके अलावा एक बीएमडब्ल्यू एम 1000 आरआर बाइक भी बुद्ध सर्किट पर पहुंची है।

ग्रेटर नोएडा। बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पर 22 से 24 सितंबर के बीच होने वाली मोटोजीपी रेस में राइडर्स की सुरक्षा करने के लिए शनिवार को बीएमडब्ल्यू सेफ्टी बाइक और कार बीआईसी ट्रैक पर पहुंची। इनमें बीएमडब्ल्यू एम5सीएस स्पोर्ट्स कार है। यह कार 300 से 320 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल सकती है। इसके अलावा एक बीएमडब्ल्यू एम 1000 आरआर बाइक भी बुद्ध सर्किट पर पहुंची है। बीएमडब्ल्यू एम 2 (जी-7) सेफ्टी कार और बीएमडब्ल्यू एम 3 ट्रैकिंग कार रविवार को सर्किट पर पहुंचेंगी।

बीआईसी ट्रैक पर पहुंची कार और बाइक हाईड्रेड सुविधाओं से लैस होती हैं। यदि रेस के दौरान आग लग जाती है तो बीएमडब्ल्यू एम5सीएस में कुछ मैडिकल उपकरणों के साथ-साथ आग बुझाने के उपकरण भी मौजूद होते हैं। इसके साथ ही अन्य सुविधाएं भी होती हैं।

राइडर्स के साथ ट्रैक पर दौड़ेगी कार और बाइक

22 राइडर्स जब रेस के दौरान 350 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से ट्रैक पर दौड़ रही होंगी। तब ट्रैक के समानांतर फिट लेन पर तीन कारें और एक 1000 सीसी की बाइक सवार लगभग उसी ही स्पीड में राइडर्स की सुरक्षा

करने के लिए चलेंगी।

मोटोजीपी के दौरान बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पर लगभग एक लाख 10 हजार दर्शकों को रफ्तार का रोमांच देखने को मिलेगा। रेस के दौरान एक सुपर बाइक सवार और तीन सुपर कार इन राइडर्स की सुरक्षा के लिए इसी लेन पर साथ-साथ चलेंगी।

रेस के दौरान हादसा या दुर्घटना होने पर कुछ ही पलों में यह फिट लेन से हादसे वाले स्थान पर पहुंच जाते हैं। सुपर बाइक सवार और कार सवार राइडर्स की स्पीड में कार-बाइक चलाने में माहिर होते हैं। सुपर बाइक और कार सवार प्रशिक्षित होते हैं कि इमरजेंसी के समय राइडर्स को क्या-क्या राहत पहुंचानी है।

टैंपल'स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम-डीएल-0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण रजिस्टर्ड

कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए-4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063, कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

इस चुनाव 2023: जंग जीतने के लिए छात्र संगठनों ने तैयार की पर्दे के पीछे की रणनीति, दिलचस्प हो रही लड़ाई

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूस्) चुनाव में एक हफ्ता भी नहीं बचा है। सभी छात्र संगठनों ने अपनी शक्ति झोंक दी है। प्रत्याशी भी तय हो चुके हैं। छात्र संगठन प्रत्याशियों के साथ कालेजों में प्रचार कर रहे हैं। दूसरी ओर इन संगठनों की देशभर की इकाइयां चुनाव में सक्रिय हो गई हैं। राजनीतिक पार्टियों के नेता भी अपने-अपने स्तर पर जनसमर्थन जुटाने में लगे हुए हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूस्) चुनाव में एक हफ्ता भी नहीं बचा है। सभी छात्र संगठनों ने अपनी शक्ति झोंक दी है। प्रत्याशी भी तय हो चुके हैं। छात्र संगठन प्रत्याशियों के साथ कालेजों में प्रचार कर रहे हैं। दूसरी ओर, इन संगठनों की देशभर की इकाइयां चुनाव में सक्रिय हो गई हैं। राजनीतिक पार्टियों के नेता भी अपने-अपने स्तर पर जनसमर्थन जुटाने में लगे हुए हैं। 22 सितंबर को डूस् चुनाव के लिए मतदान होना है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) की सभी इकाइयां कालेजों में प्रचार में जुटी हुई हैं। एबीवीपी के डूस् के पूर्व पदाधिकारी पहले ही प्रचार की कमान हाथ में लेकर कालेजों में जाकर छात्रों से संवाद कर रहे हैं। प्रत्याशी भी चार हिस्सों में बंटकर अलग-अलग कालेजों में जा रहे हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एबीवीपी के कार्यकर्ता चुनाव में काफी सक्रिय हैं। जाट और गुर्जर जातियों के छात्रों से संवाद की जिम्मेदारी इनको सौंपी गई है।

दिल्ली में बढ़ी शिशु मृत्यु दर ने बढ़ाई चिंता, तीन वर्ष में अबतक सबसे ज्यादा हुई मौतें

राजधानी में मृत्यु दर कम होने के बावजूद एक वर्ष तक की उम्र के शिशुओं की मृत्यु दर बढ़ गई है। पिछले साल 7155 शिशु की मौत हो गई जो तीन वर्षों में सबसे अधिक है। शिशु मृत्यु दर बढ़ने का एक कारण विशेषज्ञ कोरोना के दौर में बच्चों का नियमित टीकाकरण प्रभावित होना और विभिन्न बीमारियों का संक्रमण अधिक होना बता रहे हैं।

नई दिल्ली। राजधानी में मृत्यु दर कम होने के बावजूद एक वर्ष तक की उम्र के शिशुओं की मृत्यु दर बढ़ गई है। इस वजह से पिछले साल 7155 शिशु की मौत हो गई, जो तीन वर्षों में सबसे अधिक है। यह बात सिविल पंजीकरण सर्वे (जन्म मृत्यु पंजीकरण) रिपोर्ट से सामने आई है। शिशु मृत्यु दर बढ़ने का एक कारण विशेषज्ञ कोरोना के दौर में बच्चों का नियमित टीकाकरण प्रभावित होना और विभिन्न बीमारियों का संक्रमण अधिक होना बता रहे हैं। वर्ष 2019 दिल्ली में एक हजार जीवित जन्मे बच्चों में शिशु मृत्यु दर 24.12 थी, जो वर्ष 2020 में घटकर 20.37 हो गई थी। इसके बाद दो वर्षों से लगातार शिशु मृत्यु दर में बढ़ोतरी हुई। वर्ष 2021 में दिल्ली में शिशु मृत्यु दर 23.60 थी, जो पिछले वर्ष बढ़कर 23.82 हो गई। **शिशु मृत्यु दर बढ़ना स्वास्थ्य सुविधाओं पर गंभीर सवाल** शिशु मृत्यु दर स्वास्थ्य सुविधाओं को परखने का एक

एबीवीपी के राष्ट्रीय मीडिया संयोजक आशुतोष सिंह ने कहा, "संगठन के पास दिल्ली में काफी सक्रिय कार्यकर्ता हैं। कालेजों में लंबे वक्त तक चले सदस्यता अभियान चलाए गए हैं। इससे संगठन से काफी छात्र जुड़े हैं। इसका फायदा प्रचार में देखने को मिल रहा है। हालांकि, एबीवीपी के अलावा भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी डूस् चुनाव में सक्रिय हैं। वे चुनाव से चार दिन पहले प्रचार की कमान हाथों में लेंगे। उनका पूरा फोकस डीयू और कालेजों के आसपास बने पीजी और प्राइवेट छात्रावासों पर है। यहां जाकर वे छात्रों से संपर्क करेंगे और अभावित के लिए मतदान करने की अपील करेंगे। छात्रों के मेस और भोजनालय पर भी संगठन का फोकस है।"

NSUI ने भी कसी कमर दूसरी ओर, भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) के प्रत्याशी अपने-अपने स्तर पर प्रचार कर रहे हैं। संगठन की दूसरे प्रदेशों की इकाइयां भी विश्वविद्यालय और कालेजों में सक्रिय हैं। एनएसयूआई की बिहार इकाई के पदाधिकारी पूर्वांचल के छात्रों से संपर्क कर रहे हैं। पश्चिमी, पूर्वी और बाहरी दिल्ली के कालेजों में पूर्वांचल के छात्रों की तादाद अधिक है। इन पर फोकस कर रहे हैं। तेलंगाना, उड़ीसा, केरल, उत्तर प्रदेश इकाई के पदाधिकारी भी अपने प्रदेश के छात्रों से संपर्क कर रहे हैं। एनएसयूआई के पदाधिकारी ने कहा, श्रीराम कालेज आफ कामर्स में बड़ी संख्या में तेलंगाना और आंध्र

- एनएसयूआई की बिहार, उड़ीसा और तेलंगाना, केरल इकाइयां भी सक्रिय - पीजी से लेकर मेस तक छात्रों से संवाद करने की हो रही कोशिश



प्रदेश के छात्र हैं। इनसे संगठन संवाद स्थापित कर रहा है। वहीं, दिल्ली कांग्रेस कमेटी की ओर से भी समन्वय समिति का गठन किया गया है। इसमें पांच सदस्य रखे गए हैं। दिल्ली कांग्रेस के

पदाधिकारियों को कालेजों के छात्रों से संपर्क करने को कहा गया है। एनएसयूआई के मीडिया संयोजक अक्षय लाकड़ा ने कहा, अध्यक्ष और सचिव उम्मीदवार विधि संकाय से आते हैं। यहां छात्रों की संख्या अधिक है।

पांच हजार से अधिक विधि संकाय के छात्र मतदान करते हैं। ऐसे में उनका झुकाव उनके संकाय के प्रत्याशी की तरफ रहना लाजमी है। इस समीकरण का विशेष ख्याल रखा गया है। इसका फायदा चुनाव में संगठन को मिलेगा।

डीयू के कॉलेजों व विभागों में होने वाली स्थायी नियुक्ति के लिए कोई लिखित परीक्षा नहीं होगी --प्रो. भागी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर अजय भागी व एनडीटीएफ की बढ़ती लोकप्रियता के त्रस्त डूटा चुनाव के समय कुछ शिक्षक संगठनों द्वारा यह भ्रम फैलाया गया कि भविष्य में होने वाली कॉलेज व विभागों में असिस्टेंट प्रोफेसर की स्थायी नियुक्ति की प्रक्रिया विश्वविद्यालय प्रशासन लिखित परीक्षा के माध्यम से कराएगा। दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (डूटा) व एनडीटीएफ की ओर से डूटा चुनाव में उम्मीदवार प्रोफेसर ए. के. भागी को जैसे ही पता चला उन्होंने तुरंत इस संदर्भ में संज्ञान लेते हुए डीयू के कुलपति प्रोफेसर योगेश सिंह को पत्र लिखा। पत्र लिखकर उन्होंने असिस्टेंट प्रोफेसर की स्थायी नियुक्ति में लिखित परीक्षा के संदर्भ में स्पष्टीकरण मांगा।

दिल्ली विश्वविद्यालय के संयुक्त कुलसचिव (भर्ती) ने विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से डूटा अध्यक्ष प्रोफेसर ए. के. भागी को पत्र लिखकर स्पष्टीकरण व जवाब दिया है कि असिस्टेंट प्रोफेसर की स्थायी भर्ती में लिखित परीक्षा संबंधी दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा कोई निर्णय नहीं लिया गया है और न ही किसी तरह का विश्वविद्यालय द्वारा प्रपोजल है। केवल फैकल्टी ऑफ टेकनोलॉजी में इस तरह का प्रावधान किया गया है। प्रोफेसर भागी ने शिक्षकों से कहा है कि वे किसी भी शिक्षक संगठन के बहकावे में न आए, चुनाव के समय उन शिक्षक संगठनों के पास मुद्दे तो हैं नहीं इसलिए वे एडहॉक शिक्षकों के बीच भ्रम व डर का माहौल बनाकर शिक्षकों को अपने पक्ष में करना चाहते हैं। उन्होंने शनिवार को अपने चुनाव के दौरान शिक्षकों से कहा है कि चुनाव के समय कुछ शिक्षक संगठनों का काम लेटर - लेटर का खेल भी खेलेंगे कि हम दिल्ली सरकार के कॉलेजों में समायोजन कराएंगे, उन्होंने कहा कि शिक्षकों को पता होना चाहिए कि दिल्ली सरकार के पूर्ण वित्त पोषित 12 कॉलेजों में ना तो समय पर सैलरी, ना एरियर, ना पेंशन, और न ही शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने का विज्ञापन दिया जा रहा। उन्होंने बताया कि दिल्ली की सरकार इन पदों को भरना नहीं चाहती वह एडहॉक, गैस्ट टीचर्स बनाकर रखना चाहती है जिसका हम डूटा के हर प्लेटफॉर्म पर विरोध करेंगे। प्रोफेसर भागी ने भाष्कराचार्य कॉलेज, दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, राजधानी व शिवाजी आदि कॉलेजों में

- कुछ शिक्षक संगठनों ने शिक्षकों के बीच फैलाया था भ्रम - डूटा अध्यक्ष ने विश्वविद्यालय प्रशासन को लिखित परीक्षा न हो, लिखा था पत्र, विश्वविद्यालय ने दिया स्पष्टीकरण, नहीं होगी असिस्टेंट प्रोफेसर की भर्ती में लिखित परीक्षा।



शिक्षकों के बीच जाकर अपनी उपलब्धियों को बताते कहा कि उनके 22 महीने के कार्यकाल में 10000 यूनिट शिक्षकों की प्रमोशन, डीयू के इतिहास में पहली बार कॉलेजों में प्रोफेसरशिप आई और इसके अंतर्गत 650 शिक्षक प्रोफेसर बने। उन्होंने बताया कि अभी तक 20 से अधिक कॉलेजों ने अपने यहाँ असिस्टेंट प्रोफेसर की स्थायी नियुक्ति की प्रक्रिया पूरी कर ली है और लगभग 20 कॉलेजों में नियुक्ति प्रक्रिया जारी है। इस समय 2900 शिक्षक स्थायी हो चुके हैं। इसमें एससी/एसटी व ओबीसी कोटे के अंतर्गत 1400 शिक्षकों की नियुक्ति हुई है वहीं 200 इंडब्ल्यूएस

शिक्षक व लगभग 100 पीडब्ल्यूडी शिक्षकों की भर्ती हुई है। प्रोफेसर भागी ने अपने कार्यकाल की दो अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि कॉलेजों में फिजिकल एजुकेशन में प्रोफेसरशिप पद मिला। इसी तरह से लाइब्रेरीयन भी प्रोफेसर बने। प्रोफेसर भागी ने बताया कि उनके कार्यकाल में एडहॉक महिला शिक्षिकाओं को मातृत्व अवकाश मिला व एडहॉक शिक्षकों के बच्चों को एडमिशन में वार्ड कोटा दिलाया। उन्होंने अपने प्रचार के दौरान शिक्षकों से अपील की है कि उन्हें डूटा में एक ओर मौका दे ताकि वे शिक्षकों के लिए बेहतर सर्विस कंडीशन ला सके, एडहॉक शिक्षकों

की पूरी सर्विस काउंट कराना, ओल्ड पेंशन स्कीम लागू कराना, बेहतर मेडिकल सुविधाएं उपलब्ध कराना, 25 फीसदी इंडब्ल्यूएस सीटें लाना, बाकी बचे कॉलेजों में ओबीसी सेकेंड राउंड के पदों को भरवाना आदि उनकी प्राथमिकता में हैं। उन्होंने बताया है हर कॉलेज में शिक्षक उन्हें सुन रहे हैं और सवाल भी पूछ रहे हैं वे हर सवाल का जवाब दे रहे हैं, शिक्षक उनके कार्यों से बहुत खुश हैं, वे उन्हें एक मौका और देना चाहते हैं ताकि बाकी बचे हुए कार्यों को करा सके। प्रो. बिजेंद्र कुमार डॉ. हरेंद्र कुमार सिंह डॉ. हंसराज सुमन

प्रख्यात भारतीय कवि, अनुवादक और निबंधकार रंजीत होसकोटे ने इस कविता संग्रह का संपादन किया है

दिल्ली समेत नोएडा-गाजियाबाद में मूसलाधार बारिश, सुहाने मौसम ने लोगों को दी उमस से राहत

शुक्रवार सुबह हुई तेज बारिश के बाद आज शनिवार को भी एनसीआर के कई इलाकों में बारिश के बाद मौसम सुहाना हो गया है। गाजियाबाद और नोएडा में बारिश से उमस में कमी आई है जिससे लोगों को राहत मिली है। वर्षा के बाद ठंडी हवाएं चलने से मौसम अधिक सुहावना हो गया। कल सुबह बारिश के बाद पूरे दिन धूप खिली जिससे लोगों को काफी गर्मी हुई।

गाजियाबाद। दिल्ली-एनसीआर के कई इलाकों में शनिवार सुबह बारिश के बाद मौसम सुहाना हो गया है। शुक्रवार सुबह हुई बारिश के बाद पूरे दिन धूप निकली रही जिससे काफी उमस बढ़ गई थी लेकिन आज की बारिश और ठंडी हवाओं के बाद लोगों को राहत का अनुभव हो रहा है।

दिल्ली में भी सुबह हुई बारिश इससे पहले आज सुबह राष्ट्रीय राजधानी

दिल्ली के भी कई इलाकों में बारिश हुई थी, जिससे आसपास के इलाकों का मौसम भी बदल गया था। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के मुताबिक आज सुबह दिल्ली का न्यूनतम तापमान 26.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सीजन के औसत तापमान से दो डिग्री ऊपर रहा। **24 घंटे में दिल्ली में हुई 0.6 मीमी बारिश** दिल्ली में बीते 24 घंटे यानी कल से आज सुबह 8.30 बजे तक 0.6 मीमी. बारिश दर्ज की गई। वहीं आज सुबह 8.30 बजे 85 प्रतिशत आर्द्रता दर्ज की गई। आईएमडी का अनुमान है कि आज राजधानी में पूरे दिन बादल छाए रहेंगे और कई जगह हल्की बारिश हो सकती है। वहीं पूरे दिन 35 डिग्री तक तापमान दर्ज किया जा सकता है। **दिल्ली की हवा भी हुई साफ** वहीं बारिश के कारण दिल्ली की हवा भी कुछ साफ है। सुबह 11 बजे के करीब दिल्ली का एक्वूआई 84 दर्ज किया गया। गौरतलब है कि 0-50 तक एक्वूआई को अच्छा, 51-100 तक संतोषजनक, 101-200 तक ठीक-ठीक, 200-300 खराब, 301-400 तक बहुत खराब, 401-500 तक गंभीर श्रेणी में माना जाता है।



आगरा में शनिवार रात्रि 10 बजे से 22 सितम्बर तक रहेगा रूट डायवर्ट

मयूर खान

आगरा। पुरानी मण्डी चौराहा पर मेट्रो रेल परियोजना के अन्तर्गत भूमिगत टनल निर्माण कार्य के दृष्टिगत, पुरानी मण्डी चौराहा होकर जाने वाले तथा आने वाले सभी प्रकार के वाहनों का आवागमन रहेगा प्रतिबन्धित।

अरुण चंद, अपर पुलिस उपायुक्त (यातायात) कमिश्नरेट अरुण चन्द ने अवगत कराया है कि पुरानी मण्डी चौराहा पर मेट्रो रेल परियोजना के अन्तर्गत, भूमिगत टनल निर्माण कार्य के दृष्टिगत पुरानी मण्डी चौराहा होकर जाने वाले तथा आने वाले सभी प्रकार के वाहनों के आवागमन पर प्रतिबंध रहेगा। इन वाहनों का 13 सितम्बर (रात्रि 10:00 बजे) से 22 सितम्बर तक निम्न प्रकार से डायवर्जन किया जायेगा। जिसके क्रम में ताजव्यू चौराहा से पुरानी मण्डी चौराहे की तरफ आने वाले समस्त प्रकार के वाहनों का आवागमन प्रतिबन्धित रहेगा। होटल हावर्ड प्लाजा तिराहा से पुरानी मण्डी चौराहे की तरफ आने वाले समस्त प्रकार के वाहनों का, आवागमन प्रतिबन्धित रहेगा। तथा फूल सैय्यद चौराहा से पुरानी मण्डी चौराहे की तरफ आने वाले समस्त प्रकार के वाहनों का आवागमन पर प्रतिबन्धित रहेगा। इसी क्रम में विक्टोरिया पार्क तिराहा से पुरानी मण्डी चौराहा की तरफ आने वाले समस्त प्रकार के वाहनों का आवागमन प्रतिबन्धित रहेगा।

विक्टोरिया पार्क तिराहा से पुरानी मण्डी चौराहा होकर माल रोड एंव फतेहाबाद रोड की तरफ जाने वाले समस्त प्रकार के वाहन विक्टोरिया पार्क तिराहा से अमर सिंह गेट तिराहा, बालूगंज चौकी चौराहा, करियप्पा चौराहा होकर अपने गन्तव्य को जा सकेंगे।



ताजव्यू चौराहा से पुरानी मण्डी चौराहा होकर आगरा फोर्ट / यमुना किनारा की और जाने वाले समस्त प्रकार के वाहन चाजव्यू चौराहा से अमर होटल, फूल सैय्यद चौराहा, करियप्पा चौराहा से होकर अपने गन्तव्य को जा सकेंगे।

रुपये दोगुना करने के नाम कमेटी डालकर 20 महिलाओं से ढाई करोड़ ठगे

गाजियाबाद। कविनगर क्षेत्र में किट्टी पार्टी व कमेटी डालकर रुपये दोगुना करने का झांसा देकर 20 से ज्यादा महिलाओं से करीब ढाई करोड़ रुपये ठगने का मामला सामने आया है। महिलाओं का आरोप है कि दो साल तक जन्सी पांडेय रुपये लेती रही। समय पूरा होने पर उन्होंने रुपये नहीं लौटाए। इसी बीच उनकी मौत हो गई तो जन्सी के परिवार के लोग धमकी देने लगे। मामले में उन्होंने अरुण पांडेय, प्रणय पांडेय और पल्लवी कम्बोज के खिलाफ कविनगर थाने में केस दर्ज कराया है। महिलाओं का आरोप है कि 2018 में उनकी मुलाकात जन्सी पांडेय से हुए। जन्सी ने अपने पति व अन्य लोगों के साथ मिलकर किट्टी पार्टी व कमेटी डाली। हर महीने वे उनसे रुपये लेते रहे। अब तक उन्होंने उनसे करीब ढाई करोड़ रुपये ले लिए। आरोप है कि जन्सी की मौत के बाद अरुण के पास रुपये मांगने गए तो अरुण व अन्य लोगों ने उनके साथ अभद्रता की और गाली-गलौज कर जान से मारने की धमकी देकर भाग दिया। आरोपियों ने उनसे ली गई रकम से अलग-अलग जगह प्लांट व मकान खरीद लिए। 20 जुलाई 2023 को जब वह कमेटी के रुपये लेने उनके घर गए तो आरोपियों ने महिलाओं के साथ अश्लील हरकतें कर जान से मारने की नीयत से एक महिला का गला भी दबाया। एसीपी अभिषेक श्रीवास्तव का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है। जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

शिप्रा सनसिटी पुलिस चौकी में पासपोर्ट सत्यापन के लिए रिश्तत लेते पुलिसकर्मी का वीडियो वायरल



गाजियाबाद। इंदिरापुरम कोतवाली की शिप्रा सनसिटी पुलिस चौकी में पासपोर्ट सत्यापन के लिए पांच सौ रुपये रिश्तत लेते सिपाही का वीडियो एक्स (ट्विटर) पर प्रसारित हुआ है। शनिवार शाम को यह वीडियो के साथ एक अकाउंट से अपलोड किया गया। वीडियो वायरल होने के बाद मामला पुलिस प्रशासन के संज्ञान में आ गया और कार्रवाई करते हुए पुलिसकर्मी को निर्लंबित कर दिया है। इसके साथ लिखा गया है कि यूपी में बाबा की चेतावनी का भय और भ्रष्टाचार की जंग में भ्रष्टाचार एक बार फिर जीता। गाजियाबाद के इंदिरापुरम कोतवाली की शिप्रा सनसिटी पुलिस चौकी में पासपोर्ट सत्यापन के लिए थाना वसूली फीस। यह एक पुरानी रंपरा है जो सभी थानों में आज भी ईमानदारी से निभाई जा रही है। इसे मुख्यमंत्री कार्यालय, उत्तर प्रदेश पुलिस और गाजियाबाद पुलिस को टैग किया गया। थाना प्रभारी निरीक्षक इंदिरापुरम योगेंद्र सिंह का कहना है कि मामला संज्ञान में आया है। जांच कराई जा रही है।

खूंखार आवारा कुत्तों के आतंक से गाजियाबाद के लोग खौफजदा, एक दिन में 33 मासूमों समेत 223 लोगों को काटा

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के कुत्ते खूंखार हो रहे हैं। रोज लोगों को काट रहे हैं। एक ही दिन में जिले में 33 बच्चों समेत 223 लोगों को कुत्तों ने काटा है। सबसे अधिक शहरी क्षेत्र में 113 लोगों ने कुत्तों के काटने पर एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाई है। इनमें चार लोगों के पैरों पर कुत्तों ने घाव भी कर दिए गए।

गाजियाबाद। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के कुत्ते खूंखार हो रहे हैं। रोज लोगों को काट रहे हैं। एक ही दिन में जिले में 33 बच्चों समेत 223 लोगों को कुत्तों ने काटा है। सबसे अधिक शहरी क्षेत्र में 113 लोगों ने कुत्तों के काटने पर एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाई है। इनमें चार लोगों के पैरों पर कुत्तों ने घाव भी कर दिए गए। रजपुर के रहने वाले आठ वर्षीय देवांश को साईकल चलाते वक्त आवारा कुत्तों ने पीछा करके वार किया तो देवांश गिर गया। उसके दाहिने हाथ की अंगुली को कुत्ता चबा गया। देवांश के पिता अमित ने बताया कि आवारा कुत्तों का आतंक बढ़ता जा रहा है। घायल देवांश को संयुक्त अस्पताल में एआरवी लगवाई गई है। इसके अलावा धूकना की रहने वाली 27 वर्षीय नीतू को आवारा कुत्ते ने दोनों पैरों में काटकर घायल कर दिया। संयुक्त अस्पताल में दो दिन के लिए एंटी रेबीज वैक्सीन बची है। पता चला है कि जनपद में एआरवी खत्म होने वाली है। लखनऊ से 5000 हजार घायल कुत्ता मांग की गई है। पूरे जिले में कुल 559 लोगों ने एआरवी लगवाई है।

कहाँ कितने लोगों ने लगवाई रेबीज की वैक्सीन ?			
अस्पताल	नए	पुराने	
जिला एमएमजी अस्पताल		83	86
संयुक्त अस्पताल	30	81	
सीएचसी डासना	19	34	
सीएचसी मुरादनगर	28	42	
सीएचसी मोदीनगर	29	31	
सीएचसी लोनी	21	39	
सीएचसी भोजपुर	13	23	

लिव इन में रहने वाली महिला की हत्या कर यमुना में फेंका था शव, आरोपी गिरफ्तार

फरीदाबाद में लिव-इन में रह रही महिला की गला दबाकर हत्या कर यमुना में शव को फेंकने वाले आरोपित को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपित ने महिला को 16 अगस्त को नशे की हालत में गला दबाकर हत्या की वारदात को अंजाम दिया था। वह महिला के शव को ओंटो में ले गया था। इसके बाद शव को यमुना नदी में फेंक दिया था।

फरीदाबाद। लिव-इन में रह रही महिला की गला दबाकर हत्या कर यमुना में शव को फेंकने वाले आरोपित को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उसके खिलाफ सेक्टर-58 थाने में मुकदमा दर्ज किया गया है।

महिला के साथ लिव-इन में रहता था आरोपी

इससे पहले महिला की गुमशुदगी की रपट थाने में दर्ज है। अब आरोपी के गिरफ्तार होने के बाद इस मामले का खुलासा हुआ है। थाना सेक्टर-58 प्रभारी अनूप सिंह की सीकरी पुलिस चौकी की टीम ने आरोपी धर्मेन्द्र को पकड़ा है। वह मूल रूप से उत्तर प्रदेश के हाथरस के गांव बसगोई का रहने वाला है। आरोपित एक साल से गांव सीकरी में रहता था। उसके साथ लक्ष्मी उर्फ राधा नामक महिला लिव इन में रहती थी। आरोपित नशा करके महिला के साथ झगड़ा व मारपीट करता था। महिला के पिता पप्पू ने 19 अगस्त को लक्ष्मी के गुम होने की सूचना पुलिस को दी थी। सूचना पर गुमशुदगी का मामला दर्ज कर महिला की तलाश की जा रही थी।

गला दबाकर महिला की हत्या की

आरोपित धर्मेन्द्र भी उसी दिन से अपने घर से लापता था। इसलिए पुलिस को उस पर शक हुआ। आरोपित को पुलिस चौकी सीकरी प्रभारी सुनील की टीम ने सेक्टर-58 ट्रांसपोर्ट नगर से काबू किया। पूछताछ में सामने आया कि आरोपित ने महिला को 16 अगस्त को नशे की हालत में गला दबाकर हत्या की वारदात को अंजाम दिया था। वह महिला के शव को ओंटो में ले गया था। उसने ओंटो चालक को कहा की उसकी पत्नी की तबीयत खराब है, इसे मोहना पुल तक छोड़वा दो।

कंस्ट्रक्शन कंपनी का जीएम गिरफ्तार, अन्य की गिरफ्तारी को पुलिस की दबिश जारी

ग्रेटर नोएडा में बिसरख कोतवाली क्षेत्र की आप्रपाली ड्रीम वैली प्रोजेक्ट में हुए हादसे में पुलिस ने गिरधारी लाल कंस्ट्रक्शन कंपनी के जीएम देवेन्द्र सिंह उर्फ देवेन्द्र शर्मा को गिरफ्तार किया है। अन्य लोगों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम दबिश दे रही है। मामले में कुल 9 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई थी।

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा में बिसरख कोतवाली क्षेत्र की आप्रपाली ड्रीम वैली प्रोजेक्ट में हुए हादसे में पुलिस ने गिरधारी लाल कंस्ट्रक्शन कंपनी के जीएम देवेन्द्र सिंह उर्फ देवेन्द्र शर्मा को गिरफ्तार किया है। अन्य लोगों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम दबिश दे रही है। मामले में कुल 9 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई थी। बता दें कि शुक्रवार को हुए इस हादसे में अब तक आठ कामगारों की मौत हो चुकी है।

शुक्रवार को हुआ था हादसा

निर्माणधीन आप्रपाली ड्रीम वैली प्रोजेक्ट में 14वीं मंजिल पर झटका लगने से पैसेंजर लिफ्ट गिर गई, जिसके चलते चार कामगारों की मौत हो गई। वहीं पांच घायल हो गए थे, जिनमें से चार की



शनिवार (16 सितंबर) सुबह मौत हो गई। एक कामगार का इलाज आईसीयू में चल रहा है।

24वें मंजिल पर जारी थी लिफ्ट

शुक्रवार सुबह पीओपी का काम करने के लिए साढ़े आठ बजे 24वीं मंजिल पर जाने के लिए नौ कामगार लिफ्ट में सवार हुए। लिफ्ट 14वें फ्लोर पर पहुंची तो अचानक तार टूट गया। लिफ्ट नीचे गिरी और कामगार लिफ्ट में फंस गए।

दूसरे कामगारों ने लिफ्ट का गेट तोड़कर उन्हें बाहर निकाला। सभी को अस्पताल भिजवाया गया। अस्पताल में उपचार के दौरान बिहार के कटिहार के इस्ताक अली, विपोत मंडल, बांका के

अरुण तांती और अमरोहा, उप्र के आरिश खान की मौत हो गई।

पुलिस ने कुछ अज्ञात समेत 9 नामजद लोगों पर केस दर्ज किया

पुलिस ने नौ लोगों को नामजद करते हुए कुछ अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। अधिकारियों ने प्रोजेक्ट को सील कर वहां पर काम करने वाले कामगारों को बाहर निकालने का आदेश दिया है।

आरोप है कि सुरक्षा मानकों की अनदेखी भी की जा रही थी। आप्रपाली बिल्डर दिवालिया घोषित हुआ तो न्यायालय के आदेश पर प्रोजेक्ट एनबीसीसी (नेशनल बिल्डिंग

कलियुग का लक्ष्मण..दो सग भाइयों की सच्ची कहानी-: डॉ. मनोज

"भैया, परसों नये मकान पर हवन है। छुट्टी (इतवार) का दिन है। आप सभी को आना है, मैं गाड़ी भेज दूँगा।" छोटे भाई लक्ष्मण ने बड़े भाई भरत से मोबाईल पर बात करते हुए कहा।

"क्या छोटे, किराये के किसी दूसरे मकान में शिफट हो रहे हो?"

"नहीं भैया, ये अपना मकान है, किराये का नहीं।"

"अपना मकान, भरपूर आश्चर्य के साथ भरत के मुँह से निकला।

"छोटे तूने बताया भी नहीं कि तूने अपना मकान ले लिया है।"

"बस भैया", कहते हुए लक्ष्मण ने फोन काट दिया।

"अपना मकान", "बस भैया" ये शब्द भरत के दिमाग में हथौड़े की तरह बज रहे थे।

भरत और लक्ष्मण दो सगे भाई और उन दोनों में उम्र का अंतर था करीब पन्द्रह साल। लक्ष्मण जब करीब सात साल का था तभी उनके माँ-बाप की एक दुर्घटना में मौत हो गयी। अब लक्ष्मण के पालन-पोषण की सारी जिम्मेदारी भरत पर थी। इस चक्कर में उसने जल्द ही शादी कर ली कि जिससे लक्ष्मण की देख-रेख ठीक से हो जाये।

प्राइवेट कंपनी में वर्ल्क का काम करते भरत की तख्तावाह का बड़ा हिस्सा दो कमरे के किराये के मकान और लक्ष्मण की पढ़ाई व रहन-सहन में खर्च हो जाता। इस चक्कर में शादी के कई साल बाद तक भी भरत ने बच्चे

पैदा नहीं किये। जितना बड़ा परिवार उतना ज्यादा खर्चा।

पढ़ाई पूरी होते ही लक्ष्मण की नौकरी एक अच्छी कम्पनी में लग गयी और फिर जल्द शादी भी हो गयी। बड़े भाई के साथ रहने की जगह कम पड़ने के कारण उसने एक दूसरा किराये का मकान ले लिया। वैसे भी अब भरत के पास भी दो बच्चे थे, लड़की बड़ी और लड़का छोटा।

मकान लेने की बात जब भरत ने अपनी बीबी को बताई तो उसकी आँखों में आँसू आ गये। वो बोली, "देवर जी के लिये हमने क्या नहीं किया। कभी अपने बच्चों को बढ़ािया नहीं पहनाया। कभी घर में महँगी सब्जी या महँगे फल नहीं आये। दुःख इस बात का नहीं कि उन्होंने अपना मकान ले लिया, दुःख इस बात का है कि ये बात उन्होंने हम से छिपा के रखी।"

इतवार की सुबह लक्ष्मण द्वारा भेजी गाड़ी, भरत के परिवार को लेकर एक सुन्दर से मकान के आगे खड़ी हो गयी। मकान को देखकर भरत के मन में एक हूक सी उठी। मकान बाहर से जितना सुन्दर था अन्दर उससे भी ज्यादा सुन्दर। हर तरह की सुख-सुविधा का पूरा इन्तजाम। उस मकान के दो एक जैसे हिस्से देखकर भरत ने मन ही मन कहा, "देखो छोटे को अपने दोनों लड़कों की कितनी चिन्ता है। दोनों के लिये अभी से एक जैसे दो हिस्से तैयार कराये हैं। पूरा मकान

सवा-डेढ़ करोड़ रुपयों से कम नहीं होगा। और एक मैं हूँ, जिसके पास जवान बेटी की शादी के लिये लाख-दो लाख रुपयों का इन्तजाम भी नहीं है।"

मकान देखते समय भरत की आँखों में आँसू थे जिन्हें उन्होंने बड़ी मुश्किल से बाहर आने से रोका।

तभी पण्डित जी ने आवाज लगाई, "हवन का समय हो रहा है, मकान के स्वामी हवन के लिये अग्नि-कुण्ड के सामने बैठें।"

लक्ष्मण के दोस्तों ने कहा, "पण्डित जी तुम्हें बुला रहे हैं।"

यह सुन लक्ष्मण बोले, "इस मकान का स्वामी मैं अकेला नहीं, मेरे बड़े भाई भरत भी हैं। आज मैं जो भी हूँ सिर्फ और सिर्फ इनकी बढौलत। इस मकान के दो हिस्से हैं, एक उनका और एक मेरा।"

हवन कुण्ड के सामने बैठते समय लक्ष्मण ने भरत के कान में फुसफुसाते हुए कहा, "भैया, बिटिया की शादी की चिन्ता बिल्कुल न करना। उसकी शादी हम दोनों मिलकर करेंगे।"

पूरे हवन के दौरान भरत अपनी आँखों से बहते पानी को पोछ रहे थे, जबकि हवन की अग्नि में धुँए का नामोनिशान न था।

आज के युग में जहाँ एक भाई दूसरे भाई का हक मार रहा है, वहाँ कुछ भाई भरत व लक्ष्मण जैसे भी मौजूद है, जिनकी वजह से ईंसनियत जिंदा है।



जसवंत सैनी और डॉ.महेश शर्मा ने किया ईवी इंडिया एक्सपो का उद्घाटन, 200 कंपनियों ने पेश किए वाहन

इंडिया एक्सपो मार्ट सेंटर में गुरुवार को तीन दिवसीय ईवी इंडिया एक्सपो का आगाज हुआ। प्रदर्शनी में इलेक्ट्रिक से लेकर हाइब्रिड वाहन, ऑटोमोटिव कंपोनेंट्स एक्सेसरीज, बैटरी मैनेजमेंट और स्टोरेज सिस्टम समेत उत्पाद प्रदर्शित किए गए। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रदेश सरकार में मंत्री जसवंत सैनी और सांसद डॉ. महेश शर्मा ने किया। ईवी इंडिया एक्सपो में क्या-क्या आया यह आयोजन ग्रीन सोसाइटी ऑफ इंडिया एंड इंडियन एंजीविशन सर्विसेज द्वारा किया जा रहा। प्रदर्शनी में टाटा मोटर्स, जैन मोबिलिटी, ई-बाइक गो बाय एसीईआर, क्वॉटम एनर्जी, याकुजा ई-बाइक, मंत्रा ई-बाइक, जेएचईवी ऑटो, गो इजी स्मार्ट के अलावा बैटरी मैनेजमेंट, स्टोरेज सिस्टम, चार्जिंग उपकरणों, चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर, डिवाइस, सॉफ्टवेयर आदि शामिल हैं।

फरवरी 2023 तक चार लाख वाहन पंजीकृत

मंत्री जसवंत सैनी ने कहा कि पेट्रोलियम पदार्थ की बढ़ती कीमतों और प्रदूषण से निजात पाने के लिए इलेक्ट्रिक वाहन महत्वपूर्ण हैं। प्रदेश सरकार ई-वाहनों को बढ़ावा दे रही है। फरवरी 2023 तक प्रदेश में करीब चार लाख वाहन



पंजीकृत हो चुके हैं। इंडियन एंजीविशन सर्विसेज के डायरेक्टर स्वदेश कुमार का कहना है कि भारतीय इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग नया कारोबार है। रिमोट से होगी बाइक कंट्रोल ईवी एक्सपो में कई तकनीकों पर आधारित स्कूटी भी पेश की

गई। कम खर्च पर ज्यादा चलने वाली इन स्कूटी को देखने के लिए काफी लोग पहुंचे। वेग ऑटो मोबाइल द्वारा तैयार स्कूटी 10 रुपए की बिजली में 100 किलोमीटर तक सफर करा सकेगी। कुछ बाइक ऐसी हैं, जिन्हें रिमोट से कंट्रोल किया जा सकता है। इससे चोरी होने का खतरा कम रहेगा।



सबसे अधिक रेंज देने के लिए जानी जाती हैं ये इलेक्ट्रिक कारें

WLTP के अनुसार ये इलेक्ट्रिक मोटर्स 78 kWh बैटरी पैक से शक्ति प्राप्त करते हैं जो एक बार चार्ज करने पर 418 किमी तक की दावा की गई रेंज प्रदान करता है। Volvo XC40 Recharge महज 4.9 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकती है।

नई दिल्ली। इस समय इंडियन मार्केट में एक से बढ़कर एक बेहतरीन गाड़ियों को लॉन्च किया गया है, जो बेहतरीन रेंज देने के लिए जानी जाती है। इस खबर के माध्यम से आपको बताने जा रहे हैं उन गाड़ियों के बारे में जो देश में सबसे अधिक रेंज देने के लिए जानी जाती हैं।

हुंडई कोना
हुंडई कोना इलेक्ट्रिक कार भी 400 से अधिक की रेंज देने के लिए जानी जाती है। साल 2019 में लॉन्च हुए हुंडई कोना की शुरुआती कीमत लगभग चौबीस लाख रुपया है। बेहतरीन लुक और डिजाइन से लैस इस गाड़ी में कई एडवांस फीचर्स के साथ सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं। रेंज की बात करें तो ये इलेक्ट्रिक कार सिंगल चार्ज पर 452 किमी की रेंज देने में सक्षम है।

वॉल्वो XC रिचार्ज
WLTP के अनुसार ये इलेक्ट्रिक मोटर्स 78 kWh बैटरी पैक से शक्ति प्राप्त करते हैं, जो एक बार चार्ज करने पर 418 किमी तक की दावा की गई रेंज प्रदान करता है। Volvo XC40 Recharge महज 4.9 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकती है। फास्ट चार्जर (150kW) का उपयोग करके इसकी बैटरी को लगभग 28 मिनट में 10 से 80 प्रतिशत तक चार्ज किया जा सकता है। रेंज की बात करें ये गाड़ी सिंगल चार्ज पर 418 किमी की रेंज देने में सक्षम है।

मर्सिडीज बेंज ईक्व्यूबी
इस लगजरी इलेक्ट्रिक कार को केवल 500 4मैट्रिक ऑप्शन के साथ सेल करेगी। ये 402 बीएचपी की पावर और 858Nm का पीक टॉर्क जनरेट करती है। ये कार एक बार सिंगल चार्ज पर केवल 521 किलोमीटर तक चल सकती है। इसमें 90.6 kWh लिथियम आयन बैटरी पैक मिलता है। जो चारों पहियों में पावर देने का काम करता है। ईक्व्यूएस 170kW DC फास्ट चार्जर का इस्तेमाल करती है।



डायनामो ने लॉन्च किया कुल 6 इलेक्ट्रिक स्कूटर्स, एंटी-थेफ्ट अलार्म फीचर्स से है लैस



इन मॉडलों में मल्टीपरपज एवं किफ़ायती प्रोडक्ट्स को आकर्षक रंगों में पेश किया गया है। पर्यावरण के अनुकूल ये वाहन अतिरिक्त एक्सेसरीज के साथ उपलब्ध हैं जैसे ब्लूटूथ स्पीकर एंटी-थेफ्ट अलार्म यूएसबी चार्जिंग पोर्ट और सेंट्रल लॉकिंग सिस्टम। कंपनी का कहना है कि उनके प्रोडक्ट्स इन-हाउस बैटरी सिस्टम से पावर्ड हैं और किफ़ायती दाम पर राइडरो को राईड का खासतौर पर लास्ट माईल डिलीवरी का उत्कृष्ट अनुभव प्रदान करते हैं।

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक स्कूटर बनाने वाली स्टार्टअप कंपनी डायनामो ने ईवी एक्सपो 2023 में अपनी कुल 6 इलेक्ट्रिक स्कूटर्स की रेंज को भारतीय बाजार में उतारा है, जिसमें लो और हाइ स्पीड वाली इलेक्ट्रिक स्कूटर्स शामिल हैं। आइये जानते हैं इन 6 मॉडल्स और उनकी कीमतों से लेकर फीचर्स के बारे में।

ईवी इंडिया एक्सपो 2023 में लॉन्च हुए ये 6 मॉडल्स
डायनामो ने जिन 6 इलेक्ट्रिक स्कूटर्स को लॉन्च किया है उसमें इन्फिनिटी, एल्फा, स्माइली, आरएक्स1, आरएक्स4 और वीएक्स1 मॉडल्स शामिल हैं।

मिलेंगे ये एडवांस और सेफ्टी फीचर्स
कंपनी का कहना है कि इन मॉडलों में मल्टीपरपज एवं किफ़ायती प्रोडक्ट्स को आकर्षक रंगों में पेश किया गया है। पर्यावरण के अनुकूल ये वाहन अतिरिक्त एक्सेसरीज के साथ उपलब्ध हैं जैसे ब्लूटूथ स्पीकर, एंटी-थेफ्ट अलार्म, यूएसबी चार्जिंग पोर्ट और सेंट्रल लॉकिंग सिस्टम। कंपनी का कहना है कि उनके प्रोडक्ट्स इन-हाउस बैटरी सिस्टम से पावर्ड हैं और किफ़ायती दाम पर राइडरो को राईड का, खासतौर पर लास्ट माईल डिलीवरी का उत्कृष्ट अनुभव प्रदान करते हैं।

आरएक्स1, आरएक्स4 हाइ स्पीड इलेक्ट्रिक स्कूटर
हाई स्पीड आरटीओ रजिस्टर्ड मॉडल्स में आरएक्स1 और आरएक्स4 शामिल हैं जो 2-3किलोवॉट की फास्ट चार्जिंग लिथियम बैटरी के साथ अधिकतम 65 किलोमीटर प्रति घण्टा की स्पीड देते हैं। इनकी एक्स-शोरूम कीमत क्रमशः रु



82,000 और रु 99,000 है।
ले स्पीड इलेक्ट्रिक स्कूटर
ले स्पीड में नए मॉडल्स में शामिल हैं- एल्फा, स्माइली, इन्फिनिटी, वीएक्स1, जो एक बार 3-4 घण्टे चार्ज करने पर 200 किलोमीटर तक की रेंज देते हैं। ये 2-3 किलोवॉट की लिथियम-आयन बैटरी और 10 एवं 12 इंच के टायर साइज के साथ राईड को स्मूद बनाते हैं तथा रु 55000 की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत पर कंपनी की डीलरशिप्स में उपलब्ध हैं। इन मॉडल्स के मुख्य फीचर्स हैं फायर प्रूफ बैटरी, स्वेपेबल बैटरी, स्मार्ट बीएफएस, जीपीएस, आईओटी टेक्नोलॉजी आदि।

कंपनी का बयान
इस मौके पर शंकर गुप्ता, डायरेक्टर, डायनामो इलेक्ट्रिक ने कहा, कि ये सभी प्रोडक्ट्स हाई-स्पीड एवं मल्टी-परपज दोपहिया वाहन की मांग को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किए गए हैं। कंपनी अपने डीलर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स एवं उपभोक्ताओं से मिले सहयोग के लिए उनकी आभारी हैं। हमारी अब तक की यात्रा में हमने शानदार सेल्स परफोमेंस दर्ज की है और ईवी उद्योग में नए मानक स्थापित किए हैं। वर्तमान में हमारे डीलर और डिस्ट्रीब्यूटर पूरे भारत के साथ-साथ आस-पास के देशों में भी हैं। हम अन्य शहरों एवं राज्यों में भी अपने डीलर नेटवर्क का लगातार विस्तार कर रहे हैं।

कानूनी बाध्यता के बगैर अप्रभावी है जी-20



योगेंद्र योगी

वर्ष 1999 में गठन के बाद से समूह के अधिकांश साझे बयान बस बयान तक ही सीमित रह गए। जैसे रोम में साल 2021 शिखर सम्मेलन के दौरान जी-20 नेताओं ने कहा था कि वे सार्थक और प्रभावी कार्यों के साथ ग्लोबल वार्मिंग को सीमित करेंगे, विदेशों में कोयला बिजली संयंत्रों के वित्तपोषण को समाप्त करेंगे।

दिखने में जी-20 बहुत ताकतवर वैश्विक संगठन नजर आता है। इसके सदस्य देशों के पास मिलाकर दुनिया की 80 प्रतिशत जीडीपी, 60 प्रतिशत आबादी और 75 प्रतिशत ग्लोबल ट्रेड है। ऐसे में इस सम्मेलन में लिया गया फैसला दुनिया की इकोनॉमी पर बड़ा असर डाल सकता है, लेकिन फैसले पर अमल हो, इसकी कोई गारंटी नहीं है। यही वजह है कि जी-20 अपने अस्तित्व में आने के बाद से लेकर अभी तक विश्व को कोई ठोस दिशा नहीं दे सका है। इसके सदस्य देश आपस में द्विपक्षीय या त्रिपक्षीय आधार पर कोई समझौता अपने देशों के फायदे के लिए बेशक कर लें, किंतु उसका वैश्विक लाभ मिलता नजर नहीं आता है। उदाहरण के तौर पर भारत ने अमरीका, यूएई सहित अन्य देशों से निजी तौर पर ऐसे ही समझौते किए हैं। जी-20 देशों के समूद के पास बैठक के दौरान लिए गए निर्णयों की पालना की बाध्यता के लिए जब तक कोई कानूनी उपाय नहीं किए जाएंगे, तब तक भारी-भरकम नजर आने वाले इस संगठन की प्रासंगिकता पूरी नहीं हो पाएगी। इसके विपरीत संयुक्त राष्ट्र संगठन में कोई कोई प्रस्ताव पारित किया जाता है तो सभी देशों को उसके मानने की बाध्यता होती है‘ द्विपक्षीय समझौतों को छोड़ कर सामूहिक तौर पर जी-20 के सदस्यों पर कोई बाध्यता नहीं है कि वो जी-20 के संकष पर किए अपने वादों को निभाएं ही। जी-20 के पास भी ऐसा कोई साधन नहीं है, जिसके तहत इन वादों को लागू करने के लिए कुछ किया जा सके। जी-20 की अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि साल 2008 के आर्थिक संकट को मैनेज करना था। तब आर्थिक संकट को काबू करने में इस समूह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वहीं जी-20 ने आईएमएफ और वलड बैंक में कुछ सार्थक बदलाव भी किए। इसके बावजूद जलवायु परिवर्तन जैसे मसले हैं जिन पर पेरिस समझौते के बाद भी कुछ नहीं हुआ। जिस तरह यूनाइटेड नेशन्स में बातचीत होती है, लेकिन उनके पास धन है जिसका इस्तेमाल कुछ मामलों में किया जा सकता है। जी-20 में ऐसा नहीं है। ऊपर से देखें तो जी-20 की बैठक में खूब तड़क-भड़क नजर आती है। 120 बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों के प्रमुखों का जुटना, एजेंडा तय करना, लेकिन गहराई से देखें तो अभी तक जी-20 से कुछ भी हासिल नहीं हुआ है। इस तरह के आर्थिक प्लेटफॉर्म तभी ज्यादा कामयाब होते हैं जब दुनिया में भू-राजनीतिक तनाव कम हो। अभी ऐसी स्थिति है कि यह तनाव बहुत ज्यादा हावी है। बड़ी शक्तियां आपस में एक-दूसरे के साथ



काम करने को तैयार नहीं हैं। उन्हें साथ लाना बड़ी चुनौती होती जा रही है। वैश्विक तनाव का प्रभाव केवल जी-20 पर हुआ है, ऐसा नहीं है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भी डेडलॉक है क्योंकि रूस-चीन एक तरफ हैं और परिचमी देश एक तरफ हैं। कोविड के समय विश्व स्वास्थ्य संगठन ने काम नहीं किया, क्योंकि चीन ने वहां अड़ेंगे लगाए। डब्ल्यूटीओ काम नहीं कर रहा। जी-20 एक नया संगठन है, जिसमें आर्थिक हालात को सुधारने की बात की गई है, लेकिन इसका कोई खास असर विश्व पर नहीं हुआ। वर्ष 1999 में गठन के बाद से समूह के अधिकांश साझे बयान बस बयान तक ही सीमित रह गए। जैसे रोम में साल 2021 शिखर सम्मेलन के दौरान जी-20 नेताओं ने कहा था कि वे सार्थक और प्रभावी कार्यों के साथ ग्लोबल वार्मिंग को सीमित करेंगे, विदेशों में कोयला बिजली संयंत्रों के वित्तपोषण को समाप्त करेंगे। बाद में साल 2022 में अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने बताया कि दुनिया भर में कोयला आधारित बिजली उत्पादन एक नई ऊंचाई पर पहुंच गया है। कोयले में निवेश 10 प्रतिशत बढ़कर 150 अरब डॉलर होने की उम्मीद है। इससे कार्बनजनित प्रदूषण में बढ़ोतरी हुई है। मई में हिरोशिमा में जी-7 नेताओं द्वारा निरंतर जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने में तेजी लाने पर सहमति जताने के बावजूद जी-20 की ओर से रोडमैप पर सहमति नहीं बन पाई। वर्ष 2021 में, जी-20 के एक बड़े टैक्स सुधार का समर्थन किया जिसमें प्रत्येक देश के लिए कम से कम 15 प्रतिशत का वैश्विक न्यूनतम

कर शामिल था। इसने नए नियमों का भी समर्थन किया जिसके तहत अमेजन जैसे बड़े वैश्विक व्यवसायों को उन देशों में कर का भुगतान करना होगा जहां उनके उत्पाद बेचे जाते हैं, भले ही वहां उनके कार्यालय न हों। ग्लोबल टैक्स एग्रीमेंट एक बड़ा कदम था, लेकिन यह अब तक लागू नहीं हुआ। साल 1999 से पहले कुछ सालों से एशिया आर्थिक संकट से जूझ रहा था, जिसे देखते हुए जर्मनी में जी-8 देशों की बैठक हुई और जी-20 का गठन किया गया। इसमें सभी मजबूत अर्थव्यवस्था वाले 20 देशों के वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों को बुलाया गया। संगठन का मकसद वैश्विक आर्थिक मुद्दों पर आपसी चर्चा कर हल निकालना था। साल 2008 की वैश्विक मंदी के बाद यह निर्णय लिया गया कि इस बैठक में सभी देशों के राष्ट्राध्यक्ष भी हिस्सा लेंगे। जी-20 समिट दुनिया के 20 देशों द्वारा मिलकर बनाया गया एक शक्तिशाली ग्रुप है। साल 1999 में इसकी स्थापना की गई। इसे मजबूत अर्थव्यवस्था वाले देशों द्वारा मिलकर आपसी सहयोग के लिए बनाया गया था। इसमें भारत, चीन, अमेरिका, रूस, जर्मनी, जापान के अलावा ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, इंडोनेशिया, साउथ अफ्रीका, संयुक्त अरब, तुर्किये, मैक्सिको, साउथ कोरिया, यूरोपीय संघ और अर्जेंटीना शामिल हैं। यूरोपियन यूनियन सहित कुछ अंतरराष्ट्रीय संगठन इसके आमंत्रित सदस्य हैं। दिखने में जी-20 बहुत ताकतवर वैश्विक संगठन नजर आता है। इसके सदस्य देशों के पास मिलाकर

दुनिया की 80 प्रतिशत जीडीपी, 60 प्रतिशत आबादी और 75 प्रतिशत ग्लोबल ट्रेड है। ऐसे में इस सम्मेलन में लिया गया फैसला दुनिया की इकोनॉमी पर बड़ा असर डाल सकता है, लेकिन फैसले पर अमल हो, इसकी कोई गारंटी नहीं है। यही वजह है कि जी-20 अपने अस्तित्व में आने के बाद से लेकर अभी तक विश्व को कोई ठोस दिशा नहीं दे सका है। इसके सदस्य देश आपस में द्विपक्षीय या त्रिपक्षीय आधार पर कोई समझौता अपने देशों के फायदे के लिए बेशक कर लें, किन्तु उसका वैश्विक लाभ मिलता नजर नहीं आता है। उदाहरण के तौर पर भारत ने अमरीका, यूएई सहित अन्य देशों से निजी तौर पर ऐसे ही समझौते किए हैं। जी-20 देशों के समूह के पास बैठक के दौरान लिए गए निर्णयों की पालना की बाध्यता के लिए जब तक बाध्यता होती है। नही मानने की सूरत में उस देश की आलोचना के साथ कई तरह के प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। इसका उदाहरण ईरान है। परमाणु शक्ति को लेकर ईरान पर कई प्रतिबंध लगाए गए हैं। ऐसे ही कानून जब तक जी-20 के निर्णयों को लागू करने के लिए नहीं बनेंगे, तब तक यह संगठन अपने सर्वोच्च उद्देश्य तक नहीं पहुंच सकेगा। इस संगठन को प्रभावी बनाने के लिए इसमें शामिल देशों को सोचना पड़ेगा। अभी इन देशों तथा पूरे विश्व को इस संगठन का कोई लाभ हो पाएगा।

संपादक की कलम से

शहादत मांगे प्रतिशोध

जम्मू-कश्मीर के अन्तर्नाग इलाके में, आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन के दौरान, राष्ट्रीय राइफल्स के कर्मांडिंग ऑफसर कर्नल मनप्रीत सिंह, मेजर आशीष, राज्य पुलिस के डीएसपी हुमायूं भट्ट और राइफलमैन रवि कुमार जिस तरह ‘शहीद’ हुए, वह अल्पतः त्रासद और मर्माहत घटना है। ऐसी शहादतों का खालीपन भरना बेहद मुश्किल होता है, क्योंकि एक सैनिक या जवान को प्रशिक्षित करने में अनधिक मशक्कत और ढेरों संसाधन लगते हैं। चार परिवारों के आंगन में ‘शहीदों’ के पार्थिव शरीर रखे थे और परिजन न चाहते हुए भी शोक-संतप्त हैं। जिन बच्चों ने कुछ समय पहले ही अपनी आंखें खोलतीं, वे पिता के साथे से अनाथ हो चुके हैं। उनकी नियति शायद यही थी!

आतंकवाद और ऑपरेशन इन व्यथाओं को महसूस ही नहीं कर सकें। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद का सफाया कर दिया गया है, हमारा राजनीतिक नेतृत्व बार-बार यही दावे करता है, लेकिन यह विराट अदृश्यसत्य है। आतंकवादी नई रणनीति, नई साजिश और नई चुनौतियों के साथ अचानक हमले करते हैं। शहादत पर देश को गर्व हो सकता है, मां भारती सुरक्षित रहती है, लेकिन घरों के चिराग भी बुझते हैं। आतंकवाद को क्या हासिल होता है? क्या इसे ही जेहाद कहते हैं? बेशक कश्मीर में आतंकवाद की बुझती, आखिरी लौ हो सकती है, लेकिन पाकपरस्त लश्कर-ए-तैयबा और उसके छद्मनाम वाले आतंकी गुट ‘द रजिस्ट्रेंस फ्रंट’ (टीआरएफ) के दहशतगढ़ अपने नापाक मंसूबों में तो कामयाब रहे हैं। बेशक 95 फीसदी आतंकवाद, उनके नेटवर्क, पुसपैठ और पाकिस्तान का छाया-युद्ध समाप्त हो रहा है, लेकिन शेष 5 फीसदी के उन्मूलन में हमें न जाने कितनी शहादतें देनी पड़ेंगी? इस घटना के साथ संघ शासित क्षेत्र के ‘पीर पंजाल’ इलाके पर फोकस हो गया है, क्योंकि वह आतंकी गतिविधियों के एक इलाके के तौर पर उभर रहा है। ‘पीर पंजाल’ में ही जनवरी, 2021 से 30 मई, 2023 के बीच 24 सुरक्षाकर्मी ‘शहीद’ हुए और 75 नागरिक मारे जा चुके हैं। आपस्तमाह तक यह आंकड़ा अधिक हो सकता है, क्योंकि कश्मीर में सुरक्षा बलों और

आतंकियों के बीच मुठभेड़ें थमी नहीं हैं। कम जरूर हुई हैं। राजौरी जिले के इस इलाके में घने जंगल और कुदरती गुफाएं हैं। वे आतंकियों के लिए ‘पनाहगार’ साबित हो रहे हैं। इस इलाके में सुरक्षा स्थितियां बेहतर मानी जाती थीं, लेकिन 2020 के बाद यह आतंकियों का नया गढ़ बन गया है और आतंकी गतिविधियां लगातार जारी रही हैं। पाकिस्तान की सीमा भी करीब लगती है। घने जंगलों के कारण ऑपरेशन चलाने में दिक्कतें होती हैं। चूँकि आतंकी घात लगाए बैठे रहते हैं, लिहाजा हमारे सैनिक और जवान गोलीबारी के सहज निशाने पर रहते हैं। केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व सेना प्रमुख जनरल वीके सिंह का मानना है कि पाकिस्तान को पूरी तरह अलग-थलग कर देना चाहिए। कैसे किया जा सकता है? हमारे क्रिकेट, कूटनीतिक और कुछ कार्योंबारी संबंध तो हैं। उन्हें खत्म करेंगे, तो पाकिस्तान अलग-थलग किया जा सकता है। लेकिन फारूक अब्दुल्ला और सैफुद्दीन सोज सखिबे कश्मीरी नेता पुराना राग अलापते रहे हैं कि पाकिस्तान से बातचीत करनी चाहिए। संवाद से ही आतंकवाद का सफाया किया जा सकता है, अमन-चैन आ सकता है, लेकिन मुठभेड़ों से आतंकवाद को समाप्त नहीं किया जा सकता। हमारा मानना है कि शहादतों की प्रतिक्रिया में पलटवार किए जाने चाहिए। सेना और सुरक्षा बल प्रतिशोध लें। ऐसा वे कर भी रहे होंगे, क्योंकि हमारे सैनिकों और जवानों के हाथ पूरी तरह स्वतंत्र हैं। बेशक बीते साल में 1.88 करोड़ पर्यटक कश्मीर की सरजमीं पर आए, बेशक जी-20 देशों की बैठक भी वहीं आयोजित की गई, बेशक कश्मीर में ‘तिरंगा’ ऊंची इमारतों पर लहराता है, लेकिन पाकपरस्त आतंकी गुट लगातार रणनीति बदलते रहे हैं, ताकि सुरक्षा-व्यवस्था को चकमा दिया जा सके। वैसे सेना के ही जनरलों का कहना है कि पंजाब और नेपाल के रास्ते भी आतंकी कश्मीर में घुस रहे हैं। हालांकि स्थानीय स्तर पर आतंकी गुटों में भर्तियां, पथरबाजी, गिरोह बहुत कम हुए हैं, लेकिन अब भी हैं और उन्हीं से आतंकवाद जन्म है।

चर्चा

‘इंडिया’ की अदालत में मीडिया

‘कभी तेरे नाम से ही खबर पर ऐतवार होता था, आज तेरे लिखे पे नफरत फैलाने का इल्जाम है।’ पत्रकारिता ने अपने महत्त्व को इतना गिरा दिया है कि अब बहस का विषय बनकर कोई एंकर कठपंरे में खड़ा है। विपक्षी एकता के नाम पर बन चुका गठबंधन लोकतंत्र की गांठ से मीडिया के एक हिस्से को अलहदा करके आखिर कहना क्या चाहता है और यह परिस्थितियां क्यों पैदा हुईं कि ‘कल तक जो हाशियों के बाहर कर रहे थे, आज अपनी ही महफिल से कट गए।’ मोदी सरकार के खिलाफ चुनावी चौपाल में हो रहे फैसलों का एक नखला अगर मीडिया पर गिर रहा है तो यह पत्रकारिता के गिरते मानदंड की चेतावनी भर नहीं, बल्कि भविष्य की मांद में एक खतरनाक आदेश पलने लगा है। मीडिया बनाम राजनीति का वर्तमान मुकाबला केवल 14 एंकरों का बहिष्कार नहीं कर रहा, बल्कि लोकतंत्र के तमाम स्तंभों के बीच जर्जर होते विश्वास, आपसी संतुलन और पारस्परिक भूमिका के धरण का भी संदेश दे रहा है। इसमें दो राय नहीं कि पिछले कुछ सालों में मीडिया खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने अपनी भाषा, शब्दावली, नैतिकता, संयम, विवेक, स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक चरित्र को कहीं तो चोट पहुंचाई है, जिससे संपूर्ण पत्रकारिता में अस्थिरता, मौका परस्ती और कारपोरेटीकरण का बोलबाला हो गया। अश्चर्य यह कि कुछ चेहरे हाई प्रोफाइल या पंच सितारा पत्रकार बनकर, मीडिया व्यापार की पेशकश में कारिंदे हो गए। कुछ राजनीतिक बिचौलिए और कुछ समाज के भीतर नफरत के बीज बोने के माहिर हो गए। पिछले सालों में जो मीडिया परिदृश्य उभरा है, उसमें पत्रकारिता ने अपनी गुणवत्ता, विवस्नीयता और सत्यनिष्ठा में अत्यंत गिरावट के साक्ष्य सौंपे हैं। आज अगर विपक्षी गठबंधन पत्रकार की अदालत में मीडिया जगत के 14 चिन्हित चेहरे अछूत घोषित हो रहे हैं, तो यह असाधारण घटनाक्रम है और जिसके प्रभाव में पत्रकारिता के मनोबल को कहीं न कहीं चोट पहुंचेगी। विडंबना यह है कि विपक्षी गठबंधन ‘इंडिया’ की पाठियां जहां सतारूढ़ हैं, वहां भी पत्रकारिता से अपेक्षाएं भिन्न या स्वतंत्र नहीं हैं। मीडिया स्वतंत्रता की कीमत या तो किसी आपराधिक केस में उलझ कर चुकानी पड़ रही है या सरकारी विज्ञापनों से किनारे लगाकर मिल रही है। लोकसभा में दी गई जानकारी के अनुसार केंद्र सरकार ने 2014-15 से दिसंबर 2022 तक प्रिंट मीडिया को 3138 करोड़ तथा इलेक्ट्रॉनिक को 3260 करोड़ के विज्ञापन बांटे हैं। जाहिर है इस धन का आबंटन मीडिया की छाती पर नहीं, घुटने टेकने की वजह से कहीं अधिक हुआ है। लेकिन यही परिदृश्य अब राज्य सरकारों भी बना रही है। दिल्ली में आप सरकार अगर छह सौ करोड़ के विज्ञापन बांट कर अपना प्रचार करती है, तो मीडिया के बीच कतारबद्ध होने की वजह भी है। आज कोई सत्ता मीडिया का मजबूत होते नहीं देख सकती, तो दूसरी ओर पत्रकारिता में ऐसे लोगों और उद्देश्यों की भीड़ एकत्रित हो रही है, जो न पेशेवर मानकों और न ही लोकतंत्र की जीवंतता के लिए संचालित होने का जन्म रखते हैं। समाचार के गठबंधन स्वरूप में मीडिया को सशक्त आकार देने का सामर्थ्य समाज से भी गायब हो रहा है। समाज और व्यवस्था के बीच नाच रहा मीडिया खुद की ताकत गंवा रहा है, तो धुरवीकरण की आड़ में बहुसंख्यकवाद के गुनाहों से उसका हड्डिया बदल चुका है। चौदह एंकरों का बहिष्कार यह तो बता रहा है कि मीडिया के आंचल में कितनी बेहयाई और बेशमी है, लेकिन दुरुस्ती के लिए यह कार्रवाई कहीं न कहीं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को भी कठघरे में खड़ी कर रही है।

सत्यपाल वशिष्ठ

हम हिंदी से हैं, हिंदी हमसे नहीं, इसलिए हिंदी भाषा का अधिक प्रयोग करने से हमें गुरेज नहीं करना चाहिए। हिंदी हमारी आन है, पहचान है, हमारे सुख-दुख की पहचान है, बहती जलधारा है, जो परंपरा और पहचान को बचाए रखती है। यह हमारी अस्मिता और गौरव का प्रतीक है। हिंदी समर्थ, विकसित और सक्षम भाषा है। हमें हिंदुस्तान में रहते हिंदी का प्रयोग करना है, न कि इसका विरोध। हमें हिंदी दिवस मनाना है, पर उसके बाद हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना है और हिंदी को सुहागिन भारत के माथे की बिंदिया बनाना है। हिंदी हमारी मन और आत्मा की भूख को शांत करती है। इसलिए हिंदुस्तान के लोगों द्वारा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हिंदी के उज्ज्वल भविष्य का प्रमाण होगा। हिंदी अपना स्थान तभी पाएगी, जब एक राष्ट्र एक भाषा नीति अपनाई जाएगी। 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी भाषा को संविधान में मान्यता प्राप्त हुई। परन्तु हिन्दी भाषा की नींव 11वीं शताब्दी में रखी गई। साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से इसे काफी समृद्ध किया। तुलसीदास, कबीर दास, सूरदास, तिलक, दयानंद, बंकिम चंद्र चटर्जी तथा महात्मा गांधी जी ने हिंदी साहित्य लिख कर इसे लोकप्रियता दी। हिंदी भाषा को भारतीय जनसंख्या का सबसे बड़ा हिस्सा समझता, बोलता एवं लिखता है। यह सरल और आम बोलचाल की भाषा है। यह सभी भाषाओं की जननी है। बहुत से शब्द अन्य भाषाओं ने इसी से लिए हैं। हिंदी भाषा ने आरंभ से ही संस्कृतियों को जोड़ने का काम किया है। कबीर, नानक जैसे अनेक संत कवि इसके साक्षी हैं। स्वाधीनता संग्राम में हिंदी ने भारतीय जनमानस को रूढ़ियों और अंधविश्वासों से दूर कर अंग्रेजी औपनिवेशक नीति के खिलाफ एक संगठित मोर्चे के रूप में जोड़ा था। आजादी के लिए

संघर्ष के 90 वर्षों तक हिंदी स्वतंत्रता आंदोलन की भाषा रही है। गांधी और अन्य नेता हिंदी भाषी प्रदेशों से न होते हुए भी उन्होंने हिंदी को देश की भाषा माना। आज हिन्दी की स्थिति संपर्क, संवाद और साहित्य की दृष्टि से अच्छी है, लेकिन शासकीय या राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी को निश्चय ही वो स्थान नहीं मिला है जिसकी वह हकदार है। हिंदी भाषा का हित तभी संभव है जब वह रोजगार, शासन और न्याय की भाषा बन पाए।

अरल जी ने हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्रदान की। उन्होंने 4 अक्टूबर 1977, मंगलवार के दिन संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा के 32वें अधिवेशन में हिंदी में भाषण दिया था। विश्व पटल पर इस गूंज ने हिंदी भाषा को एक उच्च स्थान दिया। सभी प्रतिनिधियों ने खड़े होकर भाषण का अभिनंदन किया। हिंदी हमारे लिए गौरव की भाषा है। इसे राष्ट्रभाषा कानूनी रूप से करना चाहिए, क्योंकि एक राष्ट्र एक भाषा ही किसी देश की पहचान है और यह उस भाषा के साथ भी न्याय होगा, परंतु विडंबना है कि अब तक सरकारें इसके प्रति उदासीन रही हैं और हैं। हिंदी को राष्ट्र भाषा का दर्जा दिलाने में अब तक काम हुआ है जितना, वह है किसी सरोवर की कुछ बूंदों आदि। भारत में हिंदी भाषा के साथ उपेक्षा का व्यवहार हो रहा है। बचपन में जब हिंदी सीखने का समय होता है तो बच्चे कान्वेंट कल्चर ग्रहण करते हैं। ऐसा भ्रम फैलाया जाता है कि अंग्रेजी ही रोजगार दिला सकती है। यह सच है कि नई पीढ़ी में हिंदी के प्रति रुचि कम हुई है। इसकी वजह है कि अब विषय कई हैं और वो सब अंग्रेजी में हैं। हिंदी को वैज्ञानिक ढंग से सीखने की जरूरत है। हमें अपने बच्चों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। प्राथमिक स्तर से ही हिंदी लिखने व बोलने की आदत डालनी चाहिए।



सरकारी कामकाज और लोगों के व्यवहार में हिंदी का प्रयोग समाप्त हो रहा है। यह एक चिंता का विषय है।

‘आंख उठा कर देखिए, हिंदी प्रेमी हैं कहां, कितने ही हिंदुओं की, परम फलद आज भी है अंग्रेजी देवी।’ द्रिविक रमेश द्वारा लिखित कविता ‘हैरान थी हिंदी’ की ये पंक्तियां आज भी हिन्दी के ऊपर सही बैठती हैं : ‘खड़ी थी, साहब के कमरे के बाहर, इजाजत मांगती, मांगती दुआ, पीए साहब की तनिक, निगाह की, हैरान थी हिंदी, आज भी आना पड़ा था उसे, लटक कर खचाखच भरी, सरकारी बस के पायदान पर संभाल-संभाल कर, अपनी इज्जत का आंचल, हैरान थी हिंदी।’ हिंदी आज कुछ ऐसे तपः पुतों के पुण्य से बची है जो हिंदी को जीवन भर समर्पित रहे, जिन्होंने हिंदी के लिए सच्चे

अर्थों में संघर्ष किया, किंतु कभी भी अपने मुंह से अपने कृतित्व का प्रचार नहीं किया। हिंदी को अन्य देशों की भाषा के समान स्थान दिलाना है तो इसको सभी सरकारी संस्थानों, मंत्रालय और दूतावासों की भाषा तथा राष्ट्रभाषा घोषित करना है। हिंदी मॉरीशस, त्रिनादद, टोबैगो, गुयाना और सूरीनाम की प्रमुख भाषा है। यह फिजी की सरकारी भाषा है। हिंदुत्व की पहचान और शान हिंदी भाषा है। इसके सम्मान, उत्थान, पहचान और पालन-पोषण के लिए हर भारतवासी को दिल से पूर्ण सहयोग करना चाहिए।

हम हिंदी से हैं, हिंदी हमसे नहीं, इसलिए हिंदी भाषा का अधिक प्रयोग करने से हमें गुरेज नहीं करना चाहिए। हिंदी हमारी आन है, पहचान है, हमारे सुख-दुख की पहचान है,

बहती जलधारा है, जो परंपरा और पहचान को बचाए रखती है। यह हमारी अस्मिता और गौरव का प्रतीक है। हिंदी समर्थ, विकसित और सक्षम भाषा है। हमें हिंदुस्तान में रहते हिंदी का प्रयोग करना है, न कि इसका विरोध। हमें हिंदी दिवस मनाना है, पर उसके बाद हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना है और हिंदी को सुहागिन भारत के माथे की बिंदिया बनाना है। हिंदी हमारी मन और आत्मा की भूख को शांत करती है। इसलिए हिंदुस्तान के लोगों द्वारा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हिंदी के उज्ज्वल भविष्य का प्रमाण होगा। हिंदी अपना स्थान तभी पाएगी, जब एक राष्ट्र एक भाषा नीति अपनाई जाएगी। व्यावहारिक दृष्टिकोण से अन्य भाषाएं भी सीखी जा सकती हैं, लेकिन हिंदी का प्रयोग हमें छोडना नहीं है।

चिंतन विचार

हिंदी मंथ यानी बेचारा सितम्बर, इस बार भी हिंग्लिश की लोकतांत्रिक जमीन पर ‘आई लव हिंदी’ करते हुए बीत रहा है। पिछले सालों में लाखों कवि हुए, हजारों कवि सम्मेलन, असंख्य वेबिनार, ढेरों ऑनलाइन सम्मान पत्र सौंप दिए गए और हिंदीजी को खुश रखा गया। किसी जमाने में, जब यह महीना आता तो हिंदी प्रेमियों, कवि, लेखकों, अधिकारियों व राजनीतिज्ञों को अंग्रेजी में पुते साइन बोर्ड बुरे लगने लगते। हिंदी प्रेम दिखाऊ संस्थाएं नींद से जागती। कार्यक्रमों की सुगंधित बारिश में सब मिलकर हिंदी में भीगते। आम तौर पर अंग्रेजी में बतियाने वाले, हिंदी में लिखे बैनर उठाए हुए, सुबह सुबह ‘हिंदी वाक’ आयोजित करते। विशाल बोर्ड लगाकर हिंदी में ही हस्ताक्षर करते और समाचार पत्रों में, ‘फोटो विद न्यूज़’ छपवा डालते। अनेक प्रतियोगिताओं में नकद पुरस्कार जीतने वालों की होड़, हिंदी में लगी रहती। असली

फायदा दूरदर्शन वालों को होता, वे इस बहाने कवि सम्मेलन मुप्त में रिकार्ड कर लेते क्योंकि यदि वे कॉन्ट्रेक्ट साइन करवाते तो पैसा खर्चना पड़ता जो बिना जान पहचान वाले आम कवियों के लिए उनके पास कभी न होता। कवि सम्मेलन कभी कभार लाइव टेलीकास्ट भी किया जाना होता, यह सुघोषणा सुनकर कविता प्रेम हर तरफ बिखर जाने के कारण, कवियों की तादाद अनायास बढ़ जाया करती। छोटे परदे पर एक झलक दिखा सकने की तमन्ना में कितने ही वरिष्ठ हो चुके कवि भी इनमें शामिल होने को लालायित रहते। टेलीकास्ट करने में प्रबंधन मेहनत मांगता। मुख्य अतिथि, स्टायफ, कवि, श्रोता और अश्रोताओं सभी को स्टुडियो में मुश्किल से सैट करना पड़ता। स्क्रीन पर खाली कुर्सियां न दिखें, मोबाइल न बजे, कोई सोया न दिख जाए, बीच में न थले वगैरा वगैरा। स्टुडियो में अगली लाइन में

सोफाजी और पिछली लाइनों में प्लास्टिक की कुर्सियां होती। सोफाजी मुख्य अतिथि या गणमान्यों के लिए ही होते, कवि जब यह भूल जाते तो प्रोड्यूसर कहते, कवियों को प्लास्टिक की कुर्सियों पर ही बैठना है। यह समझाने की नहीं, समझने की बात होती। संचालक कह तो देते कि उठते समय खटरपटर न हो, लेकिन उन्हें यह ध्यान न रहता कि कवियों को प्लास्टिक की कुर्शियां, दोनों की खासियत यही है। कार्यक्रम में निर्णायक व गणमान्यों का मोबाइल बज सकता और जरूर बजता। बार बार सख्त घोषणा की जाती कि कविता तो से पांच मिनट की स्वरचित हो, मगर किसी को पता न चलता कि किसने स्वरचित पढ़ी, किसने चुगकर और समय मानो अंतहीन कविता हो जाता। मुख्य अतिथि हमेशा की तरह जैसे कैसे, देर से पहुंचते तो सोफाजी को भी अपनी शान बढ़ती लगती। सोफाजी पर कोई आम आदमी बैठने की

हिम्मत न कर सके, स इसलिए दो रिमूवेबल साधारण कर्मचारी अंत तक उस पर रखे रहते, हालांकि यह सोफाजी को अच्छा नहीं लगता। संचालक को जब लगने लगता कि कार्यक्रम अस्वादिष्ट होता जा रहा है तो मुख्य अतिथि का कुस्वादिष्ट भाषण परोस दिया जाता। भाषण उच्चकोटि का सूचनाशाली होता कि कवि भी सोने लगते। उसके बाद थके हुए मुख्य अतिथि कार्यक्रम के समापन तक सोफाजी पर ऊंघते रहते। कविता ने उनसे और उन्होंने कविता से कुछ लेना-देना नहीं होता। सिर्फ उन्हें ब्रांडेड कप-प्लेट में चाय पेश की जाती। इसी तरह से हिंदी-हिंदी करते सितंबर समापन की तरफ बड़ जाता और हिंदी एक माह संजीदा सेवा करवाने के बाद अधिक विकसित होकर, थक कर विश्रामालय चली जाती।

प्रभात कुमार

करोड़पति बनने का सपना होगा पूरा! इस तरह करें अपने पीपीएफ अकाउंट में निवेश

विशेषज्ञों के मुताबिक मैच्योरिटी के बाद लोग अपने पीपीएफ खाते को पांच साल के ब्लॉक पर अनंत काल के लिए बढ़ा सकते हैं। यदि आप अपने पीपीएफ खाते का विस्तार करना चाहते हैं तो आपको निवेश विकल्प भी चुनना चाहिए ताकि आप पीपीएफ अवधि के ब्याज के अलावा अपने द्वारा किए गए नए निवेश पर ब्याज अर्जित कर सकें। पढ़िए पीपीएफ खाते से आप कैसे करोड़पति बन सकते हैं।

नई दिल्ली। हम जब भी कोई निवेश करते हैं तो यही सोच कर करते हैं कि हम उससे ज्यादा से ज्यादा रिटर्न प्राप्त कर सकें। हालांकि काफी लोग ज्यादा रिटर्न तो चाहते हैं लेकिन रिस्क नहीं लेना चाहते। ऐसी स्थिति में लोग उन स्कीम में पैसा लगाना चाहते हैं जो उन्हें रिटर्न भी अच्छा दे और ज्यादा रिस्क भी न हो। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) निवेशकों की ये दोनों शर्तों को पूरा करता है। पीपीएफ सरकार द्वारा समर्थित निवेश योजना है और इसपर 1 अप्रैल 2023 से 7.1 प्रतिशत का



ब्याज मिल रहा है। लोग पीपीएफ में लॉन्गटर्म के लिए निवेश करते हैं। **कैसे खुलेगा पीपीएफ खाता ?** पीपीएफ खाते को आप किसी भी बैंक या नजदीकी डाकघर में जाकर खोल सकते हैं। इस खाते में आपको हर साल न्यूनतम 500 रुपये जमा करना जरूरी होता है। वहीं पीपीएफ खाते में आप अधिकतम 1.5 लाख रुपये निवेश कर सकते हैं। पीपीएफ खाते को मैच्योर होने में 15 साल का समय लगता है।

कैसे बचेंगे आप करोड़पति ? करोड़पति बनने का सपना हर कोई देखता है लेकिन इसके लिए बहुत जरूरी है कि आप धैर्य और सही प्लानिंग के साथ लॉन्गटर्म इन्वेस्टर बनें। एक करोड़ कमाना काफी मुश्किल है लेकिन कंपाउंडिंग की ताकत इतनी होती है कि वो किसी भी मध्यम वर्ग परिवार को आसानी से करोड़पति बना सकता है। एक्सपर्ट की माने तो कोई व्यक्ति अपने

पीपीएफ खाते को 5 साल के ब्लॉक में अनंत बार बढ़ा सकता है। जब आप अपने पीपीएफ खाते को बढ़ा रहे हो तो उसमें इन्वेस्टमेंट ऑप्शन के विकल्प को भी चुनना चाहिए ताकी आपको पीपीएफ के मैच्यूर पर ब्याज के साथ-साथ आपने जो नया इन्वेस्टमेंट किया है उस पर भी ब्याज मिले। आसान भाषा में कहें तो इस तरह रिटायरमेंट के समय तक कोई भी अपने पीपीएफ खाते में एक करोड़ से अधिक जमा कर सकता है।

पीपीएफ खाते को आप किसी भी बैंक या नजदीकी डाकघर में जाकर खोल सकते हैं। इस खाते में आपको हर साल न्यूनतम 500 रुपये जमा करना जरूरी होता है। वहीं पीपीएफ खाते में आप अधिकतम 1.5 लाख रुपये निवेश कर सकते हैं। पीपीएफ खाते को मैच्योर होने में 15 साल का समय लगता है।

बैंक में बदलने जा रहे हैं 2,000 रुपये का नोट, इन बातों का रखें ध्यान

2000 रुपये के नोट को सर्कुलर से वापस करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। आरबीआई ने मई में इसका ऐलान किया था। 2000 रुपये के नोट को एक्सचेंज या डिपॉजिट करने की आखिरी तारीख 30 सितंबर 2023 है। इस तारीख तक सभी को 2000 रुपये के नोट बैंकों में जमा कर देना चाहिए। RBI ने इसके लिए दिशा-निर्देश भी जारी किये हैं।

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने 19 मई 2023 को 2,000 रुपये के नोट को वापस सर्कुलर में लेने का ऐलान किया था। इस ऐलान के बाद लोगों को नोट एक्सचेंज करने की आखिरी तारीख 30 सितंबर 2023 तय की गई थी। 30 सितंबर से पहले तक 2,000 रुपये का नोट वैध रूप से काम करेगा। आम जनता को 30 सितंबर 2023 तक बैंक में नोट एक्सचेंज या फिर डिपॉजिट कर देना चाहिए। 2,000 रुपये का नोट बैंक और आरबीआई के कार्यालय में जाकर बदलवा सकते हैं। नोट को

एक्सचेंज करने का प्रोसेस अलग है। आरबीआई ने इसके लिए दशा निर्देश भी जारी किये हैं। बैंक इन्हीं दिशा-निर्देश का पालन करेंगे। ऐसे में अगर आप भी 2,000 रुपये के नोट एक्सचेंज करने जाते हैं तो आपको कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। **सतर्क रहें** आप जब भी नोट एक्सचेंज करने के लिए बैंक या फिर पोस्ट ऑफिस जाते हैं तो आपको अपना आईडी प्रूफ को फोटोकॉपी दिखानी होती है। आपको हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि आपके आईडी-प्रूफ को फोटोकॉपी का कोई भी गलत उपयोग ना करें। अगर कोई आपकी आईडी-प्रूफ का गलत इस्तेमाल करता है तो यह आपको कई तरह से नुकसान पहुंचा सकता है। **आईडी-प्रूफ** आप हमेशा अपना वैध आईडी-प्रूफ ही शो करें। आप आधार कार्ड (Aadhaar Card), ड्राइविंग लाइसेंस (Driving License), वोटर आईडी-कार्ड (Voter ID), पासपोर्ट (Passport), पैन कार्ड (Pan Card) और सरकार के जरिये जारी कोई और अन्य आईडी-प्रूफ को दिखा सकते हैं। आपको हमेशा फोटोकॉपी ही देनी चाहिए। आप ओरिजनल डॉक्यूमेंट्स अपने पास रखें।

किसान विकास पत्र: इस सरकारी योजना में पैसा होगा डबल, जानिए अधिकतम कितना कर सकते हैं निवेश



किसान विकास पत्र पोस्ट ऑफिस की छोटी बचत योजना के अंतर्गत आता है। मौजूदा ब्याज दर के मुताबिक किसान विकास पत्र में 115 महीने में पैसा डबल हो रहा है। इसमें निवेश करना पूरी तरह से सुरक्षित होता है। आप कम से कम 1000 रुपये से किसान विकास पत्र में निवेश की शुरुआत कर सकते हैं।

नई दिल्ली। पोस्ट ऑफिस की ओर से कई छोटी बचत योजनाओं (Post Office Small Saving Schemes) को चलाया जाता है। इन योजनाओं में निवेशकों ब्याज भी एफडी के मुकाबले अधिक मिलता है। इन्हीं छोटी बचत योजनाओं के अंतर्गत पोस्ट ऑफिस के द्वारा एक ऐसी स्कीम भी चलाई जाती है, जिसमें पैसा डबल होता है। इस योजना का नाम किसान विकास पत्र

(Kisan Vikas Patra) है। इस योजना को केवीपी (KVP) के नाम से भी जाना जाता है। **KVP में कितने समय में पैसा होगा डबल ? (How many years will KVP double in 2023 ?)** केवीपी पोस्ट ऑफिस की एक ऐसी योजना है, जिसमें लोगों को पैसा डबल करने का मौका मिलता है। मौजूदा समय में इस स्कीम में 115 महीने में पैसा डबल हो रहा है। यानी अगर आप इस स्कीम में एक लाख रुपये का निवेश करेंगे तो अगले 115 महीने पैसा दो लाख हो जाएगा। **KVP पर क्या ब्याज दर ? (What is the interest rate on KVP 2023 ?)** पोस्ट ऑफिस की छोटी बचत योजनाओं पर ब्याज दर सरकार की ओर से तय की जाती है। मौजूदा

समय में किसान विकास पत्र पर 7.5 प्रतिशत की ब्याज दर सरकार द्वारा दी जा रही है। **क्या KVP में पैसा रखना सुरक्षित है ? (Is KVP safe to invest)** केवीपी सरकारी बचत योजना है। यह किसी भी तरह से बाजार से लिंक नहीं होती है। अगर आप इसमें निवेश करते हैं तो आपका पैसा पूरी तरह से सुरक्षित रहता है। **KVP में डिपॉजिट करने की क्या सीमा है ? (What is the limit of KVP deposit)** केवीपी में डिपॉजिट को लेकर कोई भी सीमा नहीं है। आप अपनी मर्जी के मुताबिक कितना भी निवेश कर सकते हैं। इसमें ज्वॉइंड अकाउंट के जरिए भी निवेश किया जा सकता है। हालांकि, कम से कम 1000 रुपये का निवेश इस योजना में भाग लेने के लिए करना होता है।

NPS का बैलेंस चेक करने का प्रोसेस हुआ आसान अब मैसेज और पोर्टल के अलावा उमंग ऐप से भी पाएं जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज NPS Balance Check हर कोई चाहता है कि रिटायरमेंट के बाद उसकी लाइफ में इनकम के सोर्स जारी रहे। ऐसे में कई लोग नेशनल पेंशन सिस्टम में निवेश करते हैं। इसमें आप रिटायरमेंट के बाद एकमुश्त राशि या फिर पेंशन का लाभ उठा सकते हैं। अगर आप भी इसमें निवेश करते हैं तो आप मैसेज पोर्टल और उमंग ऐप के जरिये बैलेंस स्टेटमेंट चेक कर सकते हैं।

नई दिल्ली। कई लोग अपने रिटायरमेंट को सुरक्षित करने के लिए नेशनल पेंशन सिस्टम (NPS) में निवेश करते हैं। इसमें निवेश करने के बाद निवेशक को रिटायरमेंट के बाद एकमुश्त राशि देते हैं। आप निवेश की गई राशि को पेंशन के तौर पर भी ले सकते हैं। आपको समय-समय पर जरूर चेक करना चाहिए कि आप इस स्कीम में कितना निवेश कर चुके हैं? **कैसे चेक करें बैलेंस** आप उमंग ऐप (Umang App) के जरिये भी बैलेंस चेक कर सकते हैं। इसके अलावा आप एनपीएस के अधिकारिक वेबसाइट पर से भी चेक कर सकते हैं। आप मोबाइल से एसएमएस करके भी बैलेंस चेक कर सकते हैं। आइए, जानते हैं कि आप किन स्टेप्स को फॉलो करके भी बैलेंस चेक कर सकते हैं।



एसएमएस के जरिये चेक करें बैलेंस आप अपने रजिस्टर्ड फोन नंबर के जरिये भी बैलेंस चेक कर सकते हैं। इसके लिए आपको अपने फोन से 9212993399 पर मिस कॉल देना है। इसके बाद आपके पास एक मैसेज आएगा। इस मैसेज में एनपीएस अकाउंट की सारी जानकारी शामिल होगी। इस सुविधा का लाभ पाने के लिए आपको पास रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर होना चाहिए। **पोर्टल से चेक करें बैलेंस**

आप एनएसडीएल (NSDL) के अधिकारिक पोर्टल पर जाना है। यहां आपको अपने अकाउंट लॉग-इन करने के लिए लॉग-इन आईडी जो आपका रिटायरमेंट नंबर है और पासवर्ड दर्ज करना है। इसके बाद आप कैप्चा कोड दर्ज करें। अब आप होल्डिंग स्टेटमेंट के ऑप्शन को सिलेक्ट करें। इसके बाद आप जैसे ही ट्रान्जेक्शन स्टेटमेंट पर क्लिक करेंगे आपके सामने एक नया विंडो ओपन होगा। यहां आप अपने अकाउंट के डिपॉजिट अमाउंट शो होगा।

उमंग ऐप से चेक करें बैलेंस आप उमंग ऐप के जरिये भी एनपीएस अकाउंट का बैलेंस चेक कर सकते हैं। इसके लिए आपको ऐप को ओपन करके लॉग-इन करना है। लॉग-इन करने के बाद आप एनपीएस पर क्लिक करें। अब आप करंट होल्डिंग ऑप्शन को सिलेक्ट करें और अपना परमानेंट रिटायरमेंट अकाउंट नंबर और पासवर्ड दर्ज करें। इसके बाद आपका अकाउंट स्टेटमेंट शो होगा।

FPI और FII क्या होता है? दोनों में क्या है अंतर, किन वित्तीय उपकरणों में करते हैं निवेश, जानिए पूरी डिटेल

विदेशी निवेश में एफपीआई और एफआईआई दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब बात विदेशी निवेश की होती है तो विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की बात जरूर होती है। कई लोग इन दोनों को एक ही समझ लेते हैं हालांकि ऐसा नहीं है। चलिए जानते हैं दोनों का मतलब क्या है और दोनों में क्या अंतर है।

नई दिल्ली। जब भी बाजार में विदेशी इन्वेस्टमेंट की बात आती है तो विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) और विदेशी संस्थागत निवेश (एफआईआई) का जिक्र जरूर होता है। दोनों ही विदेशी निवेश में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शेयर मार्केट की खबर में आपने भी सुना या पढ़ा होगा की कल बाजार में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक या विदेशी संस्थागत निवेश बाजार में खरीदारी थे जिन्होंने बाजार में फलों करोड़ रुपये के शेयर खरीदे।



चलिए आज हम आपको एफपीआई और एफआईआई क्या होता है यह बताते हैं साथ ही यह भी जानेंगे की दोनों में क्या अंतर होता है। **क्या होता है एफपीआई ?** एफपीआई का पूरा नाम विदेशी पोर्टफोलियो निवेश होता है और जो निवेशक इसे करता है उसे विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक कहा जाता है। किसी विदेशी राष्ट्र की वित्तीय परिस्थितियों में निवेश, जैसे किसी स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्टेड स्टॉक या बॉन्ड, को

विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) के रूप में जाना जाता है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेश मतलब, विदेशी व्यक्तियों, संस्थागत निवेशकों या फंड द्वारा वित्तीय उपकरणों में किए गए निवेश। इन उपकरणों में स्टॉक, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, सरकारी प्रतिभूतियां और अन्य शामिल होते हैं। एफपीआई निवेशक कम समय में ज्यादा रिटर्न कमाने के लिए निवेश करते हैं इसलिए इन निवेशकों

की मैच्योरिटी कम होती है। **क्या होता है एफआईआई** एफआईआई का पूरा नाम विदेशी संस्थागत निवेश है। यह एफपीआई की एक एक सब कैटेगरी है। एफआईआई म्यूचुअल फंड, पेंशन फंड, बीमा कंपनियों और हेज फंड में निवेश करते हैं स्टॉक में नहीं। इसके अलावा संस्थागत निवेशक, निवेश के लिए कई स्रोतों से पैसा इकट्ठा करते हैं। व्यक्तिगत एफपीआई निवेशकों की तुलना में एफआईआई बाजारों में ज्यादा एक्टिव रहते हैं। वे निवेश से पहले पूरा अनुसंधान, विश्लेषण और उचित परिश्रम करते हैं। **दोनों में क्या है अंतर ?** एफपीआई और एफआईआई के बीच मुख्य अंतर उनका नियामक ढांचा है। एफपीआई की रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया कम कठिन है और नियामक निरीक्षण के अधीन है। वहीं एफपीआई निवेशकों के लिए प्रवेश और निकास बाधाएं कम हैं। इससे एफपीआई के पूंजी प्रवाह में अधिक लचीलापन आता है। इसलिए, वे कई बाजारों में खोज और निवेश कर सकते हैं। एफपीआई की तुलना में एफआईआई बाजार में लॉन्गटर्म के लिए पैसा लगाते हैं।

सोने की कीमत में इस हफ्ते हुई गिरावट, जानिए MCX पर क्या है रेट

सोने की कीमत में इस हफ्ते गिरावट देखने को मिली है। सोने की कीमत में नरमी की वजह डॉलर की मजबूती के साथ वैश्विक कारण हैं। डॉलर इंडेक्स एक बार फिर से 105 अंक तक पहुंच गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोना 1918 डॉलर प्रति औंस पर और चांदी की कीमत 22.91 डॉलर प्रति औंस पर है।

नई दिल्ली। अमेरिकी डॉलर के छह महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंचने के कारण सोने पर दबाव बना हुआ है। इस कारण 24 कैरेट का 10 ग्राम सोना का अक्टूबर का कॉन्ट्रैक्ट एमसीएक्स पर अपने उच्चतम स्तर से फिसलकर 58,907 रुपये पर आ गया है। चांदी की कीमत 71,538 रुपये प्रति किलो पर आ गई है। गिरा सोने का भाव इस हफ्ते 24 कैरेट के 10 ग्राम सोने की कीमत में गिरावट हुई है। एमसीएक्स पर करीब तीन हफ्तों के बाद ये पहला हफ्ता है जब सोने की कीमत में गिरावट हुई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोना और चांदी एक सीमित दायरे में बने हुए हैं। सोना की कीमत 1,918 डॉलर प्रति औंस पर और चांदी की कीमत 22.91 डॉलर प्रति औंस पर बनी हुई है। किस कारण से गिरा सोने का भाव ? सोने की कीमत में नरमी की वजह डॉलर



की मजबूती के साथ वैश्विक कारण हैं। डॉलर इंडेक्स एक बार फिर से 105 अंक तक पहुंच गया है। डॉलर में मजबूती की वजह अमेरिकी अर्थव्यवस्था में उम्मीद से ज्यादा मजबूती होनी है। इसके अलावा माना जा रहा है अमेरिकी फेड की अगली बैठक तक सोना एक सीमित दायरे में कारोबार कर सकता है। फेड की बैठक को ब्याज दर से लिए काफी अहम माना जा रहा है। कुछ समय पहले फेड की ओर से आई कमेट्री में कहा गया था कि महंगाई के स्तर को देखते हुए एक बार फिर से ब्याज दर बढ़ने को लेकर कोई फैसला लिया जा सकता है।

